पत्रकार बनें

पत्रकारिता के क्षेत्र में कुछ नया करने वाले युवक-युवतियों को 'दार्शनिक समाचार' पत्रकार बनने का अवसर प्रदान करेगा। विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें।

दार्शनिक समाचार पत्र
सी. 15/363 लल्लापुरा (मातकुण्ड) वाराणसी -221010 (उ0प्र0)

9451677163
9889014248

www.darshniksamachar.in

खबरों पर पैनी नजर
खबरों के लिये अपने मोबाइल से स्कैन करें

दार्शनिक समाचार

ताजा खबरों के लिए हमारे ग्रुप से जुड़े
DARSHNIK SAMACHAR /9451677163

: darshniksamachar@gmail.com
: darshniksamachar2@gmail.com

वर्ष : 23 अंक : 27 वाराणसी, 29 सितंबर से 05 अक्टूबर डाक पंजीयन सं.-VSI(W)05/2018-19 पृष्ठ : 4 मूल्य : 2

बुंदेलखण्ड जोन कार्यालय

नोनिया मोहाल कटरा (सिंहवाहिनी मंदिर के पीछे) जिला-बांदा

समाचार एवं विज्ञापन के लिए संपर्क करे

Mob. 9889014248
darshniksamachar2@gmail.com

लखनऊ, चंदौली, मिर्जापुर, जौनपुर, भदोही, चित्रकूट, बांदा, महोबा, हमीरपुर, फतेहपुर, जालौन, उन्नाव, कानपुर एवं झांसी से प्रसारित

उज्जैन में शाही मस्जिद का हिस्सा हटाए जाने को लेकर बवाल

पत्थरबाजी के बीच छोड़े गए आंसू गैस के गोले

एजेंसी,उज्जैन । मध्य प्रदेश के उज्जैन में सोमवार सुबह तनावपूर्ण स्थिति पैदा हो गई। ऐतिहासिक शाही मस्जिद के कुछ हिस्से को आंशिक रूप से हटाने के प्रस्ताव के विरोध में प्रदर्शन हिंसक हो गया। इस दौरान पत्थरबाजी की गई और भीड़ को तितर-बितर करने के लिए पुलिस को आंसू गैस के गोले छोड़ने पड़े। सिंघस्थ 2028 कार्यक्रम की तैयारियों के बीच मस्जिद परिसर के आसपास भारी पुलिस बल तैनात है। यह विवाद कंथल स्क्वायर से गोपाल मंदिर तक लगभग 900 मीटर के रास्ते को चौड़ा करने के काम को लेकर है। अधिकारी इस रास्ते को 15 मीटर तक चौड़ा कर रहे हैं ताकि हिंदुओं के इस बड़े धार्मिक आयोजन के दौरान आने वाले भारी संख्या में श्रद्धालुओं की भीड़ को संभाला जा सके।



इस प्रोजेक्ट के रास्ते में कई धार्मिक ढांचे आते हैं। अधिकारियों का कहना है कि रास्ते में पड़ने वाले लगभग 60 ऐसे ढांचों में से ज्यादातर को पहले ही हटाया जा चुका है। हालांकि, शाही मस्जिद और श्खड़े हनुमान मंदिरश के पास स्थित एक मजार हाल के दिनों में विरोध का केंद्र बन गए हैं। शाही मस्जिद, जिसे समुदाय के लोग सदियों पुरानी वक्फ संपत्ति बताते हैं (कुछ जानकारियों के अनुसार यह लगभग 1390 की है), के कुछ हिस्सों, जैसे प्रार्थना कक्ष, एक मीनार और उससे जुड़ी संरचनाओं, को आंशिक रूप से गिराने का प्रस्ताव है। इंदौर में मध्य प्रदेश हाई कोर्ट ने पहले उज्जैन नगर निगम के नोटिस को चुनौती देने वाली याचिकाओं को खारिज कर दिया था, जिसमें आने वाले सिंघस्थ के लिए जनहित और ट्रैफिक की जरूरतों का हवाला दिया गया था। इस मामले से जुड़ी अगली सुनवाई सोमवार को इंदौर हाई कोर्ट में होनी थी।

कार्रवाई की आशंका को देखते हुए, अधिकारियों ने भारी मशीनरी (जिसमें अर्थ-मूविंग मशीनें भी शामिल थीं) के साथ लगभग 2,000 पुलिसकर्मियों को तैनात किया। मुस्लिम समुदाय के लोग शनिवार रात से ही शाही मस्जिद परिसर और आस-पास की सड़कों पर इकट्ठा होने लगे और नारेबाजी करने लगे। यह विरोध रविवार रात तक जारी रहा। आवाजाही रोकने के लिए कंथल-गोपाल मंदिर मार्ग पर बैरिकेड लगाए गए और ड्रोन कैमरों से निगरानी की गई। पुलिस और रैपिड एक्शन फोर्स की टुकड़ियों ने मजबूत मौजूदगी बनाए रखी। पुलिस सूत्रों के अनुसार, सोमवार को जब हालात तनावपूर्ण बने हुए थे, तो कुछ युवाओं ने पुलिसकर्मियों पर पत्थरबाजी जारी रखी, जबकि बार-बार आंसू गैस के गोले छोड़े जा रहे थे।

चलती बस में नाबालिग से सामूहिक दुष्कर्म मामले पर सुप्रीम कोर्ट ने स्वतः संज्ञान लिया

एजेंसी,नयी दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली– राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) में चलती बस में नाबालिग से सामूहिक दुष्कर्म के मामले का स्वतः संज्ञान लेते हुए सोमवार को कहा कि ऐसी घटनाएं कानून प्रवर्तन प्राधिकारियों की व्यवस्थागत नाकामी को रेखांकित करती हैं। न्यायमूर्ति जे बी पारदीवाला और न्यायमूर्ति के विनोद चंद्रन की पीठ ने कहा कि यह घटना 2012 के दर्दनाक निर्भया कांड की याद दिलाती है। पीठ ने कहा, दिल्ली-एनसीआर में दुष्कर्म की घटनाएं बुनियादी सुरक्षा मुहैया कराने में कानून प्रवर्तन और प्रशासनिक तंत्र की व्यवस्थागत नाकामी को उजागर करती हैं। शीर्ष अदालत ने कहा कि पार्क और बसों समेत सार्वजनिक स्थानों को रोशनी, निगरानी और अन्य प्रशासनिक सुविधाओं की कमी के कारण अत्यधिक जोखिम वाले स्थान नहीं बनने दिया जा सकता।

अखिलेश का चुनावी ऐलान, सत्ता में आए तो पुरानी पेंशन बहाल, शिक्षामित्रों को शिक्षक बनाने का वादा

लखनऊ,संवाददाता। समाजवादी पार्टी (सपा) के अध्यक्ष अखिलेश यादव ने सोमवार को विधानसभा चुनाव को लेकर कई बड़े चुनावी वादे किए। उन्होंने कहा कि प्रदेश में सपा की सरकार बनने पर पुरानी पेंशन योजना लागू करने की दिशा में काम किया जाएगा और शिक्षामित्रों को शिक्षक के रूप में सम्मान देने के साथ उनकी स्थिति बेहतर की जाएगी। उन्होंने मदरसा शिक्षकों के बकाया वेतन के भुगतान और संस्कृत विद्यालयों की समस्याओं के समाधान का भी भरोसा दिया। लखनऊ स्थित सपा कार्यालय में पत्रकारों से बातचीत में अखिलेश यादव ने भाजपा सरकार पर समाज को बांटने और शिक्षा व्यवस्था की अनदेखी करने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि सरकार के पास लोगों को बांटने के अलावा कोई दूसरा काम नहीं है। मदरसों के



साथ भेदभाव किया गया है। भाजपा को केवल समाज को तोड़ना आता है। उन्होंने आरोप लगाया कि भाजपा सरकार ने आधी-अधूरी नौकरियां और आधी-अधूरी शिक्षा देने का काम किया। सपा अध्यक्ष ने कहा कि प्रदेश में उनकी पार्टी की सरकार बनने पर शिक्षा व्यवस्था में सुधार किया जाएगा। शिक्षामित्रों के संबंध में उन्होंने कहा कि उन्हें बेहतर बनाने के साथ शिक्षक के रूप में सम्मान देने का काम किया जाएगा। उन्होंने दावा किया कि शिक्षामित्रों की समस्या का समाधान होने से बंद पड़े स्कूलों को भी फिर से संचालित करने में मदद मिलेगी। अखिलेश यादव ने कहा कि 2027 में सपा की सरकार बनने पर कर्मचारियों की पुरानी पेंशन की मांग पर काम किया जाएगा। उन्होंने कहा कि वित्त विभाग के साथ मंथन कर पुरानी पेंशन योजना को लागू करने की दिशा में कदम उठाए जाएंगे।

ओपीएस पर अखिलेश यादव को ओपी राजभर का पलटवार पूछा, सत्ता में थे तो पुरानी पेंशन क्यों नहीं बहाल की ?

लखनऊ,संवाददाता। पुरानी पेंशन योजना (ओपीएस) को लेकर समाजवादी पार्टी अध्यक्ष अखिलेश यादव के बयान पर उत्तर प्रदेश सरकार में मंत्री और सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी के प्रमुख ओम प्रकाश राजभर ने पलटवार किया है। राजभर ने सवाल उठाया कि जब अखिलेश यादव उत्तर प्रदेश की सत्ता में थे, तब उन्हें पुरानी पेंशन योजना बहाल करने का मौका मिला था, लेकिन उस दौरान इसे लागू क्यों नहीं किया गया। राजभर ने इसी मुद्दे को आधार बनाकर सपा की नीतियों और उसके राजनीतिक रुख पर सवाल खड़े किए। उन्होंने अखिलेश यादव की



पीडीए (पिछड़ा, दलित, अल्पसंख्यक) राजनीति को लेकर भी टिप्पणी की और सपा पर कई राजनीतिक आरोप लगाए।

ओपी राजभर ने कहा कि पुरानी पेंशन योजना को लेकर अब सवाल उठाए जा रहे हैं, लेकिन जब सपा की सरकार थी, तब भी इस मुद्दे पर निर्णय लिया जा सकता था। उन्होंने अखिलेश यादव से पूछा कि उनके कार्यकाल में ओपीएस बहाल क्यों नहीं की गई। राजभर के इस बयान को लेकर सपा और सुभासपा के बीच चल रही राजनीतिक बयानबाजी में एक और कड़ी के तौर पर देखा जा रहा है।

चालू वित्त वर्ष में २१ सितंबर तक निर्यात १५: बढ़ा : गोयल

एजेंसी,मुंबई । वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने सोमवार को कहा कि वैश्विक आर्थिक अनिश्चितताओं के बावजूद चालू वित्त वर्ष में 21 सितंबर तक भारत का वस्तु निर्यात 15 प्रतिशत से अधिक बढ़ा है। यहां 14वीं भारत-यूएई उच्चस्तरीय निवेश कार्यबल की बैठक के बाद संवाददाताओं से बातचीत में मंत्री ने यह भी कहा कि भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) का सातवां सबसे बड़ा स्रोत संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) निकट भविष्य में 25 अरब अमेरिकी डॉलर और निवेश करने का इरादा रखता है। गोयल ने कहा, इस साल के पहले छह महीनों (21 सितंबर तक) में हमारे वस्तु निर्यात में 15 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि हुई है।

यूपीआई पर चार्ज मामले में एससी ने तत्काल रोक लगाने से किया इनकार

एजेंसी,नयी दिल्ली। यूपीआई के जरिए होने वाले कुछ व्यापारी भुगतानों पर प्रस्तावित चार्ज को लेकर सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई हुई है। शीर्ष अदालत ने फिलहाल इस नई व्यवस्था पर तत्काल अंतरिम रोक लगाने से इनकार कर दिया है। हालांकि, अदालत ने मामले को गंभीरता से लेते हुए केंद्र सरकार, यूपीआई स्टीयरिंग कमेटी, भारतीय राष्ट्रीय भुगतान निगम (एनपीसीआई) समेत संबंधित पक्षों को नोटिस जारी किया है। सभी पक्षों से चार सप्ताह के भीतर जवाब मांगा गया है। इस मामले की सुनवाई भारत के मुख्य न्यायाधीश जस्टिस सूर्यकांत की अध्यक्षता वाली पीठ कर रही है। याचिका में 2,000 रुपये से अधिक के कुछ व्यापारी भुगतानों पर 0.4 प्रतिशत एमडीआर निर्धारित किया



गया है। इसके साथ ही बड़े लेनदेन पर शुल्क की अधिकतम सीमा भी तय की गई है। 75,000 रुपये या उससे अधिक के भुगतान पर अधिकतम 300 रुपये तक चार्ज लगाया जा सकता है। हालांकि, यह व्यवस्था सभी यूपीआई भुगतानों पर लागू नहीं होगी। नई व्यवस्था को लेकर एक महत्वपूर्ण बात यह है कि व्यक्तियों के बीच होने वाले सामान्य यूपीआई भुगतान इसके दायरे में नहीं बताए गए हैं।

यानी किसी व्यक्ति द्वारा दूसरे व्यक्ति को किए जाने वाले यूपीआई ट्रांसफर पर इस प्रस्तावित एमडीआर व्यवस्था का असर नहीं होगा। सरकार की ओर से यह भी दावा किया गया है कि देश में होने वाले करीब 96 प्रतिशत व्यापारी लेनदेन इस बदलाव से प्रभावित नहीं होंगे। शुल्क केवल निर्धारित श्रेणियों में आने वाले चुनिंदा व्यापारी भुगतानों पर लागू होगा। प्रस्तावित नियमों में छोटे व्यापारियों के लिए भी अलग प्रावधान किया गया है। यूपीआई क्यूआर के जरिए हर महीने एक लाख रुपये तक प्राप्त करने वाले छोटे व्यापारियों को एमडीआर से छूट देने की बात कही गई है।

मौसम साफ होने के बाद चारधाम यात्रा फिर शुरू जिलाधिकारियों को दिए गए आवश्यक निर्देश

एजेंसी,देहरादून। उत्तराखंड में मौसम की स्थिति में सुधार के बाद चारधाम यात्रा पुनः शुरू कर दी गई है और सभी संबंधित जिलाधिकारियों को आवश्यक



दिशा-निर्देश जारी किए गए हैं। एक वरिष्ठ अधिकारी ने सोमवार को यह जानकारी दी। भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) के पूर्वानुमान के मद्देनजर यात्रियों एवं श्रद्धालुओं की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए 26 सितंबर की दोपहर से 27 सितंबर तक चारधाम यात्रा स्थगित कर दी गई थी। गढ़वाल मंडल के आयुक्त आनंद स्वरूप ने बताया कि मौसम में सुधार के बाद अब यात्रा पुनः शुरू कर दी गई है। उन्होंने कहा, संबंधित जिलाधिकारी अपने-अपने जनपदों की स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार यात्रा संचालन के संबंध में आवश्यक निर्णय ले सकते हैं। मार्ग अवरुद्ध होने, अत्यधिक वर्षा या प्रतिकूल मौसम की स्थिति में जिलाधिकारी अपने स्तर से यात्रा को अस्थायी रूप से स्थगित कर सकते हैं। अधिकारी ने कहा कि चारधाम यात्रा के दौरान यात्रियों की सुरक्षा प्रशासन की शीर्ष प्राथमिकता है और मौसम व यात्रा मार्गों की स्थिति पर लगातार नजर रखी जा रही है।

दिल्ली की अदालत ने यौन उत्पीड़न मामले में बृजभूषण शरण सिंह और विनोद तोमर को जारी किया नोटिस

एजेंसी,नयी दिल्ली। दिल्ली की एक अदालत ने सोमवार को कथित तौर पर यौन उत्पीड़न के मामले में भारतीय कुश्ती महासंघ (डब्ल्यूएफआई) के पूर्व अध्यक्ष बृजभूषण शरण सिंह को नोटिस जारी किया। इस मामले में बृजभूषण शरण सिंह को बरी किए जाने के फैसले को महिला पहलवानों ने चुनौती दी है। राऊज एवेन्यू कोर्ट के स्पेशल जज दिग्विजय सिंह ने सोमवार को चार महिला पहलवानों की याचिका पर सुनवाई की। इस दौरान सेशन कोर्ट ने बृजभूषण शरण सिंह के साथ डब्ल्यूएफआई के पूर्व सचिव विनोद तोमर को भी नोटिस भेजा। इस मामले में अगली सुनवाई 9 अक्टूबर को होगी। बृजभूषण शरण सिंह और महिला पहलवानों के बीच यह विवाद 2023 में सामने आया था। कई नामी



महिला पहलवानों ने आरोप लगाया था कि वर्ष 2016 से 2022 के बीच बृजभूषण शरण सिंह की ओर से राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं, ट्रेनिंग कैंप, डब्ल्यूएफआई कार्यालय और अन्य स्थानों पर उनके साथ अनुचित व्यवहार और यौन उत्पीड़न किया गया। इस मामले में डब्ल्यूएफआई के पूर्व सचिव विनोद तोमर को सह-आरोपी बनाया गया। महिला पहलवानों की शिकायतों के आधार पर, पुलिस ने बृजभूषण शरण सिंह के खिलाफ एफआईआर दर्ज की थी। 15 जून 2023 को पुलिस ने कई धाराओं के तहत अपराधों के लिए बृजभूषण के खिलाफ चार्जशीट भी दाखिल की। ट्रायल कोर्ट ने 10 मई 2024 को मामले में बृजभूषण पर यौन उत्पीड़न व महिलाओं की गरिमा को ठेस पहुंचाने के आरोप तय किए थे। 3 अगस्त को मामले में दिल्ली की मजिस्ट्रेट कोर्ट ने बृजभूषण सिंह और विनोद तोमर को बरी कर दिया। चार महिला पहलवानों ने मजिस्ट्रेट कोर्ट के 3 अगस्त के आदेश के खिलाफ सेशन कोर्ट का रुख किया है। इस मामले में सह-आरोपी विनोद तोमर की बरी होने के आदेश को भी चुनौती दी गई है। याचिका में कहा गया कि मजिस्ट्रेट कोर्ट का आदेश कानून की नजर में टिकाऊ नहीं है और सबूतों का गलत व चुनिंदा तरीके से आकलन किया गया है।

'तानाशाह' अब हिंसा का रास्ता अपना रहे है : खड़गे

एजेंसी,नयी दिल्ली। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने दिल्ली सरकार के मंत्री प्रवेश वर्मा द्वारा एक युवक को थप्पड़ मारे जाने की घटना को लेकर सोमवार को भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) पर तीखा हमला बोला और आरोप लगाया कि अब ये दोनों तानाशाह संगठन हिंसा पर उतारू हैं। खड़गे ने एक्स पर एक पोस्ट में यह आरोप भी लगाया कि भाजपा सरकार लोगों के सवालों से घबरा रही है और अब लाठी-डंडे तान कर जनता पर सीधे प्रहार कर रही है। खड़गे ने कहा, मोदी जी की भाजपा, लोगों के सवालों से इतना घबरा गई है कि नाराज फूफा, शेदिमागी नक्सलश और आंदोलनजीवी जैसे अपशब्द भी अब फीके पड़ रहे हैं।

अदालतें सुनेंगी, फैसला भी देंगी... लेकिन जवाबदेही जनता तय करेगी, ज्ञानेश कुमार के खिलाफ याचिकाओं पर बोले सौरव दास

एजेंसी,चंडीगढ़ । इ मुख्य निर्वाचन आयुक्त (सीईसी) ज्ञानेश कुमार के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट और हाई कोर्ट में याचिकाएं दाखिल होने के बीच सीजेपी के प्रवक्ता



सौरव दास ने कहा है कि संवैधानिक अदालतों को ऐसे मामलों की सुनवाई करने दी जानी चाहिए, लेकिन चुनाव आयोग की जवाबदेही का सवाल केवल अदालतों तक सीमित नहीं किया जा सकता। उन्होंने कहा कि आखिरकार लोकतंत्र में जवाबदेही का बड़ा सवाल जनता से जुड़ा है। सौरव दास ने सोशल मीडिया पोस्ट में कहा कि नागरिक हाई कोर्ट और सुप्रीम कोर्ट का रुख कर सकते हैं और अदालतें कानून के मुताबिक आदेश भी दे सकती हैं। हालांकि, उनके मुताबिक चुनाव आयोग के कामकाज को लेकर जवाबदेही की मांग को केवल न्यायिक प्रक्रिया पर नहीं छोड़ा जाना चाहिए। उन्होंने पश्चिम बंगाल में (एसआईआर) को लेकर हुई सुप्रीम कोर्ट की कार्यवाही का भी जिक्र किया। वें ने एक न्यायिक टिप्पणी का हवाला देते हुए सवाल उठाया कि अगर कोई मतदाता इस बार वोट नहीं दे पाता, तो क्या उसके पास वास्तव में अगली बार वोट देने का अवसर सुनिश्चित होगा।

जम्मू-कश्मीर में सियासी बवाल, सीएम उमर के स्टेटहुड प्रस्ताव पर घमासान, बीजेपी ने स्पीकर के खिलाफ खोला मोर्चा

एजेंसी,श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर विधानसभा में पूर्ण राज्य का दर्जा बहाल करने के प्रस्ताव को लेकर शुरू हुआ विवाद अब विधानसभा अध्यक्ष अब्दुल रहीम राथर के खिलाफ अविश्वास और पद से हटाने की मांग तक पहुंच गया है। सोमवार, 28 सितंबर को भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) के विधायकों ने स्पीकर पर सदन की कार्यवाही निष्पक्ष तरीके से संचालित नहीं करने का आरोप लगाते हुए उन्हें पद से हटाने का प्रस्ताव पेश किया। इस दौरान विधानसभा में बीजेपी विधायकों ने जमकर हंगामा किया और वेल में धरना भी दिया। सोमवार को जैसे ही सदन की कार्यवाही शुरू हुई, बीजेपी विधायक स्पीकर की भूमिका को लेकर विरोध जताने लगे। पार्टी विधायकों ने अब्दुल रहीम राथर के खिलाफ नारेबाजी की और उनके इस्तीफे की मांग



की। बीजेपी विधायक आर.एस. पठानिया ने सदन में बताया कि पार्टी की ओर से विधानसभा अध्यक्ष को पद से हटाने के लिए नोटिस दिया गया है। उनके मुताबिक, इस प्रस्ताव पर 23 बीजेपी विधायकों के हस्ताक्षर हैं और इसे सदन के सामने रखा गया है। आर.एस. पठानिया ने स्पीकर की कार्यप्रणाली पर सवाल उठाते हुए कहा कि बीजेपी ने उनके खिलाफ प्रस्ताव इसलिए पेश किया है क्योंकि पार्टी को लगता है कि मौजूदा परिस्थितियों में उन्हें सदन की कार्यवाही संचालित नहीं करनी चाहिए। बीजेपी की ओर से अपने रुख के समर्थन में संवैधानिक प्रावधानों और सुप्रीम कोर्ट के फैसलों का हवाला दिए जाने की बात भी सामने आई है।

पार्टी का आरोप है कि स्पीकर ने शुक्रवार को मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला की ओर से पेश किए गए राज्य का दर्जा बहाल करने संबंधी प्रस्ताव को नियमों में कथित तौर पर ढील देकर मंजूरी दी। विवाद की शुरुआत शुक्रवार, 25 सितंबर को हुई थी। मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने जम्मू-कश्मीर का पूर्ण राज्य का दर्जा बहाल करने की मांग से जुड़ा प्रस्ताव विधानसभा में पेश किया था। प्रस्ताव पेश होने के बाद सदन में जोरदार हंगामा हुआ। बीजेपी ने प्रस्ताव की प्रक्रिया और उसमें शामिल संदर्भों को लेकर आपत्ति जताई थी। बताया गया है कि प्रस्ताव में 2000 और 2024 में पारित पुराने प्रस्तावों का भी उल्लेख किया गया था। इसी मुद्दे को लेकर सत्ता पक्ष और बीजेपी विधायकों के बीच तीखी नोकझोंक हुई। बीजेपी का कहना है कि मुख्यमंत्री की ओर से पेश किए गए प्रस्ताव को स्पीकर ने जिस तरह सदन में स्वीकार किया, वह विधानसभा के नियमों के अनुरूप नहीं था।

आगरा में सीईसी ज्ञानेश कुमार के घर के बाहर कांग्रेस का प्रदर्शन, दीवार पर नारा लिखा

संवाददाता,आगरा । कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने मुख्य निर्वाचन आयुक्त (सीईसी) ज्ञानेश कुमार के आगरा स्थित घर के बाहर सोमवार सुबह प्रदर्शन किया, उनके खिलाफ नारेबाजी की तथा आवास के मुख्य द्वार और दीवार को स्प्रे पेंट से विरूपित कर दिया। प्रदर्शनकारियों में कांग्रेस और पार्टी से संबद्ध संगठनों के कार्यकर्ता शामिल थे, जो बड़ी संख्या में कुमार के विजय नगर स्थित आवास के बाहर एकत्र हुए। उन्होंने घर की चारदीवारी पर स्टिकर लगाए और पर्चे चिपकाए। प्रदर्शनकारियों ने घर के मुख्य द्वार और दीवार पर ज्ञानेश गद्दार और ज्ञानेश चोर लिख दिया। प्रदर्शन, और दीवार पर लिखे गए नारों के वीडियो बाद में सोशल मीडिया पर प्रसारित हुए। भारतीय युवा कांग्रेस ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा,



आगरा में कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने श्गद्दार ज्ञानेशश के घर को कालिख से पोत दिया। पिछले कई वर्षों में मोदी-शाह ने ज्ञानेश के साथ मिलकर देश के विभिन्न हिस्सों में जिस तरह चुनावों में गड़बड़ी की है, वह सीधे तौर पर देश के खिलाफ गद्दारी है। हम सुनिश्चित करेंगे कि ज्ञानेश को सजा मिले।

इससे पहले, 31 जनवरी 2024 को सेवानिवृत्त होने के बाद, उन्हें 15 मार्च 2024 को निर्वाचन आयुक्त नियुक्त किया गया था। सोमवार का प्रदर्शन निर्वाचन आयोग की कार्यप्रणाली, जिसमें मतदाता सूची का विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) भी शामिल है, को लेकर कांग्रेस और निर्वाचन आयोग के बीच बढ़ते टकराव के बीच हुआ।

संपादकीय

हरियाणवी प्रतिभाओं को संबल

हरियाणा सरकार के उस फैसले का स्वागत ही किया जाना चाहिए, जिसमें सरकार ने राज्य में नई खोजों को प्रोत्साहन देने के लिये पचास हजार रुपये तक की, पेटेंट रजिस्ट्रेशन फीस की प्रतिपूर्ति करने का निर्णय किया है। निश्चय ही इस कदम से उन छात्रों को संबल मिलेगा जो सीमित संसाधनों में राज्य व देश के लिये कुछ महत्वपूर्ण खोज करने का संकल्प रखते हैं। लेकिन पेटेंट तो महज एक शुरुआत भर है। असली मुश्किल सवाल यह है कि पेटेंट सर्टिफिकेट मिलने पर मेधावी युवा क्या करेंगे। निर्विवाद रूप से भारत में प्रतिभावान छात्रों, रिसर्च पेपर्स या पेटेंट की कोई कमी नहीं है। दरअसल, कमी है तो उस इकोसिस्टम की जो किसी विचार या आइडिया को लैब या विश्वविद्यालय प्रोजेक्ट से निकालकर व्यावसायिक ष्टि से सफल उत्पाद बनाता है। यही वजह है कि छात्रों को पेटेंट के लिये पैसे देने में मदद करने वाली नीति के साथ-साथ प्रोटोटाइपिंग, टेस्टिंग, बौद्धिक संपदा संरक्षण और नये विचार को मार्केट तक पहुंचाने में मदद मिलनी चाहिए। अन्यथा खोज व अनुसंधान अर्थव्यवस्था के महज पेटेंट कल्चर तक ही सिमट जाने का खतरा पैदा हो सकता है। जिसमें समाधान खोजने के बजाय पेटेंट फाइल करने पर इनाम दिया जाता है। सही मायने में इसके लिये कारगर समाधान तलाशने हेतु विश्वविद्यालयों को उद्योग जगत से और करीब से जोड़ने की जरूरत है। छात्रों को वास्तविक दुनिया की समस्याओं की पहचान करने,कंपनियों और सरकारी संस्थानों के साथ काम करने और ऐसे उत्पाद बनाने के लिये प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, जिनके लिये चिन्हित उपयोगकर्ता की पहले से पहचान हो सके। सही मायने में राज्य में शोध-अनुसंधान का वातावरण बनाने के लिये तमाम व्यावहारिक पक्षों पर गंभीरता से विचार किया जाना चाहिए। नई खोज करने वाले प्रतिभागियों को वित्तीय मदद, उत्पादन के लिये उपयोगी ढांचा, रेगुलेशन और मार्केटिंग से जुड़ी चुनौतियों से निपटने में मदद की जानी चाहिए। हरियाणा के लिये यह अवसर बेहद महत्वपूर्ण है। राज्य के विश्वविद्यालय और तकनीकी संस्थान खेती से जुड़ी विभिन्न तकनीकों, जल प्रबंधन, उत्पादन, हेल्थकेयर और स्वच्छ ऊर्जा आदि अन्य क्षेत्रों में इनोवेशन के इंजन बन सकते हैं। इसके लिये सिर्फ एक बार प्रोत्साहन राशि देने के बजाय लगातार निवेश करने की जरूरत होगी। राज्य को अपनी पेटेंट पलिसी की सफलता को सिर्फ पेटेंट की फीस की प्रतिपूर्ति वाले आवेदनों की संख्या से नहीं, बल्कि इस बात से अपनी सफलता का मूल्यांकन करना चाहिए कि उन पेटेंटों से व्यवहार में क्या हासिल हुआ। मसलन राज्य में कितने स्टार्ट-अप बने। राज्य में कितनी टेक्नोलजी का व्यवसायीकरण हुआ। उससे राज्य में

जिम्मेदार एआई में है मानवता का हित

रक्षित मदान

कृत्रिम बुद्धिमत्ता यानी एआई अब केवल विज्ञान कथाओं का हिस्सा नहीं रही है। यह हमारे दैनिक जीवन में पूरी तरह शामिल हो चुकी है। स्मार्टफोन, आनलाइन खरीदारी, चिकित्सा, शिक्षा, बैंकिंग और पुलिस व्यवस्था तक, एआई हमारे जीने और काम करने के तरीके को बदल रही है। जैसे–जैसे एआई तकनीक अधिक शक्तिशाली हो रही है, एक महत्वपूर्ण सवाल उठता है कि क्या भविष्य में एआई मानव जाति के लिए एक बड़ा खतरा बनेगी? इसका कोई सीधा जवाब हां या ना में नहीं दिया जा सकता। एआई अपने आप में खतरनाक नहीं है। असली समस्या यह है कि इंसान इसे कैसे विकसित करते हैं, नियंत्रित करते हैं और इसका उपयोग कैसे करते हैं।

कोई भी शक्तिशाली तकनीक अच्छे और बुरे दोनों कामों के लिए इस्तेमाल की जा सकती है। जिस एआई का उपयोग डाक्टर बीमारियों का पता लगाने के लिए करते हैं, उसी का उपयोग गलत लोग नकली और भ्रामक डीपफेक वीडियो बनाने के लिए भी कर सकते हैं।

पुलिस अपराधों को सुलझाने के लिए एआई की मदद ले सकती है, लेकिन अपराधी इसका इस्तेमाल ठगी, फर्जी पहचान और साइबर हमलों के लिए कर सकते हैं। एक बड़ी चिंता एआई प्रणालियों के तेजी से स्वायत्त होने को लेकर है। आज एआई खुद कोड लिख सकती है, बड़े आंकड़ों का विश्लेषण कर सकती है और पैटर्न के आधार पर फैसले ले सकती है। भविष्य में एआई बिना इंसानी देखरेख के और भी जटिल काम करने में सक्षम हो सकती है। बस बड़ा खतरा यह नहीं है कि एआई अचानक बुरी हो जाएगी, बल्कि असली खतरा इंसानों की लापरवाही है। भविष्य एआई को रोकने के बारे में नहीं है, बल्कि जिम्मेदार एआई बनाने के बारे में है। इसके लिए सरकारों, कंपनियों, विज्ञानियों और आम नागरिकों को मिलकर काम करना होगा।– रक्षित मदान, एआई विशेषज्ञ

यदि इन प्रणालियों को सही तरीके से डिजाइन नहीं किया गया या इन्हें बैंक, हथियार या महत्वपूर्ण ढांचागत सुविधाओं का अनियंत्रित अधिकार दे दिया गया, तो इसके परिणाम बेहद भयानक हो सकते हैं।

हाल ही में ऐसे मामले भी देखे गए हैं जहां एआई एजेंटों को बिना किसी रोक–टोक के खाते और पहचान की पहुंच मिलने पर वे नियंत्रण से बाहर होकर वेबसाइटों और प्रणालियों को हैक करने लगे। एक अन्य मुख्य चिंता नौकरियों को लेकर है। एआई लोगों को पूरी तरह से हटा नहीं देगी, लेकिन यह काम करने के तरीकों को बदल देगी।

दोहराव वाले और आसान काम स्वचालित हो जाएंगे। इसका मतलब यह नहीं है कि हर कोई बेरोजगार हो जाएगा। इतिहास गवाह है कि नई तकनीकें नए अवसर और नए पेशे भी लाती हैं। समाज को यह सुनिश्चित करना होगा कि लोगों को नए कौशल सीखने का मौका मिले। इसके साथ ही झूठी सूचनाओं का प्रसार भी एक बड़ा खतरा है। एआई ऐसी तस्वीरें, वीडियो और आवाजें बना सकती है जो बिल्कुल असली लगती हैं। जरा सोचिए कि किसी राजनेता का फर्जी वीडियो या किसी पारिवारिक सदस्य की नकली आवाज में पैसों की मांग करने वाला फोन कितना नुकसान पहुंचा सकता है। इससे समाज में एक–दूसरे पर भरोसा कम हो सकता है। लेकिन सबसे बड़ा खतरा यह नहीं है कि एआई अचानक बुरी हो जाएगी, बल्कि असली खतरा इंसानों की लापरवाही है।

भविष्य एआई को रोकने के बारे में नहीं है, बल्कि जिम्मेदार एआई बनाने के बारे में है। इसके लिए सरकारों, कंपनियों, विज्ञानियों और आम नागरिकों को मिलकर काम करना होगा। हमें कड़े सुरक्षा नियम, पारदर्शिता और इंसानी देखरेख की आवश्यकता है।

राष्ट्रपति शी का दबदबा, और ट्रंप के पत्ते

नित्य चक्रवर्ती

वाशिंगटन में 24 सितंबर को अमेरिका–चीन शिखर सम्मेलन में हुई डोनाल्ड ट्रंप और शी जिनपिंग की द्विपक्षीय बातचीत से व्यापार, एआई के भविष्य, पश्चिम एशिया के युद्धों और ताइवान के भविष्य जैसे मुद्दों को सुलझाने में कोई बड़ी कामयाबी तो नहीं मिली, लेकिन दोनों नेताओं के बीच दिखी गर्मजोशी ने एक मजबूत समझ की नींव रखी है कि दुनिया की दो सबसे बड़ी ताकतें वैश्विक शांति बहाल करने के लिए सहयोग करेंगी। वॉशिंगटन शिखर सम्मेलन, इस साल मई में बीजिंग में हुई ट्रंप–शी वार्ता के ठीक चार महीने बाद हुआ। यह मई के शिखर सम्मेलन में हुई बातचीत का ही अगला चरण था। इसके बाद, दोनों नेता मध्य दिसंबर में मियामी में होने वाली जी–20शिखर सम्मेलन में फिर मिलेंगे, जिसकी मेजबानी अमेरिकी राष्ट्रपति करेंगे। मियामी बैठक में वॉशिंगटन शिखर सम्मेलन के नतीजों को और आगे ले जाने की संभावना है।

वॉशिंगटन शिखर सम्मेलन में हुई बातचीत से दो बातें खास तौर पर उभरकर सामने आईं। राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने एजेंडा तय किया और कई नए प्रस्ताव पेश किए। ट्रंप ने सिर्फ अपने अंदाज में प्रतिक्रिया दी, लेकिन बातचीत के दौरान वे कोई नया सुझाव नहीं दे पाए। उन्होंने बस सभी लंबित मुद्दों पर अमेरिका का रुख दोहराया। असल में, शिखर सम्मेलन की शुरुआत में राष्ट्रपति शी ने यह बात कही कि टकराव के बजाय, चीनी राष्ट्र के महान पुनरुद्धारस्य और अमेरिका को फिर से महान बनाने (मगा) के लक्ष्यों को हासिल करना साथ–साथ चले, यही लक्ष्य होना चाहिए। राष्ट्रपति शी की यह टिप्पणी ट्रंप को बहुत अच्छी लगी, क्योंकि उनके मगा कार्यक्रम के लिए वामपंथी डेमोक्रेटिक राजनेता लगातार उनकी आलोचना करते रहे हैं। ट्रंप नवंबर में होने वाले मध्यावधि चुनावों में अपने मगा कार्यक्रम के आधार पर अपने उम्मीदवारों के लिए वोट मांग रहे हैं। मध्यावधि चुनावों से ठीक पहले राष्ट्रपति शी द्वारा मगा का समर्थन करने से बर्नी सैंडर्स और ममदानी जैसे वामपंथी डेमोक्रेट्स जरूर नाराज हुए होंगे, लेकिन चीनी राष्ट्रपति को इस बात की कोई परवाह नहीं थी कि उनकी टिप्पणी पर वामपंथी क्या सोचेंगे। शी तो ट्रंप के साथ अपने रिश्तों का इस्तेमाल करके चीन के लिए ज़्यादा से ज़्यादा फायदा उठाना चाहते थे। यह देखना दिलचस्प होगा कि राष्ट्रपति शी ने अमेरिका को एक प्रतिस्पर्धी महाशक्ति के बजाय एक साझेदार के तौर पर साथ लाने पर जोर दिया था। यह नया नजरिया असल में शी की उस भविष्य की योजना की समझ है, जिसके तहत 2049 में– जो कम्युनिस्ट चीन की स्थापना का 100वां साल होगा– चीन अमेरिका को पीछे छोड़कर दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा। भारत के मामले में भी, राष्ट्रपति शी ने इस साझेदारी पर जोर दिया, न कि उस दोस्ताना प्रतिस्पर्धा पर, जिसका जिक्र चीनी विश्लेषक हाल तक करते रहे थे। यह नजरिया शी के नेतृत्व वाली कम्युनिस्ट पार्टी की उस ताजा सोच से निकला है कि अमेरिका के साथ शांति और सहयोग की स्थिति



में चीन की आर्थिक विकास दर तेजी से बढ़ सकती है। इसलिए शी ने शिखर सम्मेलन में कहारू श्हमें शांति से साथ रहना चाहिए। चीन और अमेरिका, दो बड़े देशों के तौर पर, सहयोग से फायदा उठा सकते हैं और टकराव से दोनों को नुकसान होगा। हमारी दोनों सेनाओं के बीच नियमित बातचीत होनी चाहिए और संकट के समय बातचीत और उसे रोकने के तरीकों को बेहतर बनाना चाहिए। शी जिनपिंग का यह नजरिया नई सदी में चीनी अर्थव्यवस्था की लगातार हो रही बढ़त और सबसे बड़ी आर्थिक शक्ति अमेरिका के साथ अंतर को कम करने की कोशिश से निकला है। साल 2000 में चीन की कुल जीडीपी (वर्तमान मूल्य में) का अनुमान 1.22 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर था, जबकि अमेरिका की जीडीपी 10.25 ट्रिलियन डॉलर थी। पिछले 26 सालों में, चीन की जीडीपी बढ़कर 20.85 ट्रिलियन डॉलर हो गई है, जबकि अमेरिका की कुल जीडीपी का अनुमानित मूल्य 32.38 ट्रिलियन डॉलर है। राष्ट्रपति शी 2049 तक चीन के लिए अपनी सोच के जरिए जीडीपी के अंतर को कम करना चाहते हैं और अमेरिका को पीछे छोड़कर चीन को दुनिया की सबसे बड़ी आर्थिक शक्ति बनाना चाहते हैं। तनाव कम करने के उनके प्रस्ताव– जिनमें छात्रों को एक–दूसरे देशों में भेजने के कार्यक्रम के तहत 100,000 युवा अमेरिकियों को चीन आने का न्योता देना भी शामिल था– ऐसे समय में आए हैं जब दोनों ताकतों के बीच आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और व्यापार को लेकर कड़ी प्रतिस्पर्धा चल रही है और दोनों पक्ष एक–दूसरे पर टैरिफ लगा रहे हैं। फिर भी, युवा अमेरिकियों को युवा चीनी श्जेन जीच के साथ घुलने–मिलने देने का शी का प्रस्ताव उनके आत्मविश्वास को दिखाता था कि युवा अमेरिकियों के आने से युवा चीनी लोगों की सोच पर कोई बुरा असर नहीं पड़ेगा। चीनी राष्ट्रपति और मैडम पेंग के सम्मान में आयोजित डिनर में ट्रंप का भाषण, जिसमें अमेरिकी प्रौद्योगिकी उद्योग के दिग्गज शामिल हुए थे, अमेरिका–चीन संबंधों के इतिहास के नजरिए से काफी अहम था। उन्होंने कहा, आज रात, हम अमेरिकी धरती पर उस पहली मुलाकात की भावना को फिर से जीवंत कर रहे हैं, क्योंकि हमारे साथ आज के दौर के व्यापार, संस्कृति और सरकार के कुछ शीर्ष नेता मौजूद हैं।

एक तरफ, चीन के पास सुन त्जू से लेकर सुन यात–सेन तक का हजारों साल पुराना इतिहास और परंपरा है। वहीं अमेरिकियों के तौर पर, हमें यरूशलेम से रोम तक आस्था की विरासत, प्राचीन एथेंस का लोकतंत्र और स्पार्टा की जीत जैसी विरासतें मिली हैं। ट्रंप ने चीनी इतिहास और सभ्यता को उचित सम्मान दिया और यह निश्चित रूप से चीनी राष्ट्रपति के लिए संतोष की बात थी। हालांकि, इस व्यक्तिगत तालमेल का एआई या ईरान पर हुई बातचीत पर कोई खास असर नहीं पड़ा। एआई के मुद्दे पर, राष्ट्रपति शी ने एआई विकास पर जरूरत से ज़्यादा नियंत्रण का विरोध किया और ओपन–सोर्स एआई का समर्थन किया, जबकि अमेरिका ने चीन के एआई डेवलपमेंट को धीमा करने के मकसद से माइक्रोचिप, सेमी–कंडक्टर, सॉफ्टवेयर और चिप बनाने वाले उपकरणों पर सख्त निर्यात नियंत्रण बनाए रखने पर जोर दिया। व्यापार की बात करें तो, पिछले साल बुसान में हुए शिखर सम्मेलन में टैरिफ कम रखने के लिए जो समझौता हुआ था, वह इस साल नवंबर में खत्म होने वाला है। इस समझौते को फरवरी 2027 तक बढ़ा दिया गया है। दिसंबर में मियामी में होने वाली जी–20 शिखर सम्मेलन में दोनों नेताओं के बीच द्विपक्षीय बातचीत में इस पर और चर्चा होने की उम्मीद है। व्यापार युद्ध के बावजूद अमेरिकी बाजार में चीनी उत्पादों की बिक्री बढ़ रही है। कुल मिलाकर, 24 सितंबर के शिखर सम्मेलन में हुई बातचीत से विश्व राजनीति और अर्थव्यवस्था को सकारात्मक संकेत मिले हैं। दोनों देशों के बीच बातचीत लंबी चलेगी, लेकिन अच्छी बात यह है कि दोनों सरकारें टकराव की सीमाओं को समझती हैं। ट्रंप और शी जिनपिंग दोनों ही लेन–देन पर ध्यान देने वाले हैं। वे अपने देश के हितों को आगे बढ़ाने पर ध्यान देते हैं। बड़े मुद्दों को इसी समझ के दायरे में रखा जाएगा।

सपा-कांग्रेस मिलते हैं तो एक और एक ग्यारह, झगड़ते हैं तो जीरो!

शकील अख्तर

ओवैसी तो बंगाल बिहार हर जगह थे मगर उत्तर प्रदेश में मायावती भी हैं। विपक्ष को यहां कई मोर्चों पर लड़ना है। लेकिन फिलहाल तो वह आपस में लड़ता हुआ ही दिख रहा है। कांग्रेस और समाजवादी पार्टी के नेता आपस में एक दूसरे को नीचा दिखाने में लगे हुए हैं। इससे क्या हासिल होगा? जो वोट भाजपा में जाना नहीं चाहते इन दोनों दलों के नेताओं की एकदम निचले स्तर की बयानबाजी देखकर मजबूरी में ओवैसी और मायावती की तरफ जा सकते हैं। बीजेपी को इससे भी फायदा होगा। भाजपा इस समय रक्षात्मक मुद्रा में है। 12 साल में यह पहली बार है जब बीजेपी बचाव में है और विपक्ष हमला कर रहा है। जनता में भी आक्रोश है। और जो पूरे देश में है यूपी में उससे ज्यादा है। नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने अभी कहा कि एन्टी इन्कम्बेन्सी असर नहीं कर रही। सही है। लेकिन यूपी में सामान्य से बहुत ज्यादा सत्ता विरोधी माहौल (एंटी इन्कम्बेन्सी) है। और चुनाव आयोग के वोट चोरी का उसके ही तीन में दो चुनाव आयुक्तों ने भंडाफोड़ कर दिया है। चुनाव आयोग के खिलाफ लोगों में गुस्सा है। ऐसे में वह जो अभी तक एंटी इन्कम्बेन्सी को अपनी वोट चोरी से काउंटर कर देती थी अब नहीं कर पाएगी और तब तो बिल्कुल नहीं जब सत्ता विरोधी भावनाएं चरम पर हों। चुनाव आयोग के अलावा भाजपा की जीत का दूसरा सबसे बड़ा कारण हिन्दू–मुसलमान की उसकी राजनीति थी। मगर अब यूपी में हिन्दू –मुसलमान भी चलता हुआ नहीं दिख रहा। हिन्दू –मुसलमान के अलावा दूसरी जातियों के खिलाफ नफरत फैलाना भी यूपी में सबसे ज्यादा हो रहा था। खासतौर से ओबीसी और उसमें यादव, दलित और ब्राह्मण यह अपने आपको सबसे ज्यादा अन्याय और अत्याचार का शिकार महसूस करने लगे हैं। यह सब मिलाकर इस समय यूपी में भाजपा के लिए प्रतिकूल परिस्थितियां बन गई हैं। खेवनहार अकेले मोदी थे। मगर इस समय वे खुद राहुल के इन आरोपों से खुद को बचाने में लगे हुए हैं कि मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार तो एक पुर्जे हैं। असली दोषी तो प्रधानमंत्री मोदी और गृह मंत्री अमित शाह हैं। जनता के सबसे बड़े अधिकार उसकी ताकत वोट का ही मतलब खत्म करने में लगे हुए हैं। जनता के पास अगर वोट की ताकत ही नहीं बचेगी तो उसके पास कुछ नहीं बचेगा। उसकी फिर कोई सुनवाई होने का सवाल ही नहीं। राहुल ने सीधे जनता को मोदी के सामने खड़ा कर दिया है। यह पहली बार है जब मोदी राहुल पर विपक्ष पर आक्रमण नहीं कर पा रहे हैं, बल्कि खुद को उनके हमलों से बचाने में लगे हुए हैं। ऐसे में वे यूपी में मुख्यमंत्री योगी की कोई मदद कर पाएंगे कहना मुश्किल है। लेकिन प्रधानमंत्री मोदी मदद कर पाएं या नहीं कांग्रेस के कैमरा देखते ही लपकने वाले कुछ नेता जरूर मुख्यमंत्री आदित्यनाथ योगी की मदद कर रहे हैं। अनावश्यक रूप से वे सपा पर हमला कर रहे हैं। और यहां तक कि सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव पर भी। अखिलेश ही यूपी में विपक्ष का चेहरा हैं। अगर नैया पार लगाएंगे तो वे ही



लगाएंगे और कोई विपक्ष के पास नेता या चेहरा नहीं है। लेकिन पता नहीं क्यों उनके साथ कांग्रेस के कुछ नेता मुकाबला करने की कोशिश कर रहे हैं। वे पूर्व मुख्यमंत्री हैं। कांग्रेस का कोई है पूर्व मुख्यमंत्री यूपी में? मुख्यमंत्री छोड़िए कोई बड़ा नेता भी ऐसा जिसका राज्य भर में प्रभाव हो। नेता की जो हमारे यहां पहचान मानी जाती है कि जहां खड़ा हो जाए सौ–पचास आदमी अपने आप इकट्ठा हो जाएं। ऐसा नहीं है कि यूपी में कांग्रेस को ही सपा की जरूरत हो। सपा को भी कांग्रेस की उतनी ही जरूरत है। मगर क्या सपा के किसी नेता ने राहुल पर सवाल उठाए? इसके बरअक्स कांग्रेस के सांसद इमरान मसूद सीधे अखिलेश को चैलेंज करते रहते हैं। नाचने गाने वाले, ढोल बजाने वाले जैसे हल्के शब्दों का उपयोग करते हैं। हल्के शब्द बीजेपी में चल जाते हैं। वहां तो प्रधानमंत्री तक भैंस और श्मशान कब्रिस्तान जैसे शब्दों का प्रयोग करते हैं। मगर उनकी राजनीति का आधार नकारात्मक है इसलिए वहां नकारात्मक शब्द ही चलते हैं। कांग्रेस की राजनीति का आधार सकारात्मक है। यहां ये शब्द नहीं चलते। लोग कहते हैं कि सपा के नेता भी कांग्रेस पर हमला करते हैं। सही है। मगर यह नहीं समझते कि सपा के पास केवल एक उत्तर प्रदेश है। वह वहीं की पार्टी है। अगर वहां नहीं बोलेगी तो कहां बोलेगी? दूसरे इस बात में तो कोई दो राय है नहीं कि 37– 38 साल से कांग्रेस यूपी में नहीं है।

सिर्फ चुनाव के समय उसके प्रदेश के नेताओं का पार्टी मजबूत करने का ख्याल आता है। लेकिन उसके बाद पांच साल नहीं। हर चुनाव के टाइम पार्टी की बात करने वाले पार्टी के हितैषी नहीं। चुनाव के समय तो केवल जीत की बात करना चाहिए। पार्टी की बात पूरे पांच साल होना चाहिए। मगर यूपी क्या बिहार में भी यही हाल था, बंगाल में भी यही। कहीं पार्टी संगठन नाम की चीज ही नहीं है। केवल एक चीज काम करती है पार्टी की सब को साथ लेकर चलने की नीति और राहुल पर लोगों का विश्वास। पार्टी चाहे यूपी में कमजोर हो मगर प्रभाव बहुत है और यह बात अखिलेश जानते हैं। कांग्रेस के साथ आने से सपा की स्वीकार्यता दस गुना बढ़ जाती है। यूपी में इस समय मुस्लिम वोट इशु नहीं है। लेकिन हद दर्जे की बेवकूफी करके कांग्रेस के यूपी से संबंधित नेता उन्हें अपनी तरफ खींचने में लगे हुए हैं। जरूरत है इस समय दलित को लाने की। दलित कांग्रेस पर विश्वास करता है। सपा पर उसका संदेह कम हुआ है पर पूरी तरह मिटा नहीं है। मगर जब सपा कांग्रेस के साथ आती है तो दलित को विश्वास हो जाता है और वह इस तरफ आ जाता है। 2024 लोकसभा चुनाव से बड़ा उदाहरण कोई नहीं है। मायावती के बीजेपी से जुड़ने से नाराज दलित और दलित में वह जाति विशेष जाटव जिस पर मायावती की पूरी राजनीति टिकी है सपा और कांग्रेस के साथ आ गया था। मायावती को यह बहुत बड़ा झटका था। लोकसभा में वह साफ हो गईं थीं। साथ ही बीजेपी भी। कांग्रेस और सपा दोनों ने मिलकर 80 में से 43 सीटें जीत लीं थीं। अगर वही अनुपात अब विधानसभा में देखा जाए तो कांग्रेस सपा को 403 की विधानसभा में स्पष्ट बहुमत मिल रहा है। जबकि अब बीजेपी ज्यादा कमजोर हो गई है। ऐसे में यह बहुमत और बड़ा हो सकता है।

मुस्लिम वोट कहीं नहीं जा रहा। ऐसे में कांग्रेस को दलित के अलावा ब्राह्मण और यादव के अलावा उन दूसरी ओबीसी जातियों, अति पिछड़ा पर ध्यान देने की जरूरत है जो दलित की तरह ही सपा पर पूरा विश्वास नहीं कर पा रही हैं। यही कांग्रेस की ताकत है कि हर जाति समुदाय उस पर विश्वास करता है।कांग्रेस पर किसी एक जाति का प्रभुत्व नहीं है। बसपा में है, सपा में है, यूपी में भाजपा पर है मगर कांग्रेस के लिए कोई यह नहीं कह सकता कि वह किसी जाति विशेष के लिए काम करती है, और किसी जाति विशेष के खिलाफ रहती है।

बद्रीनाथ पर मुरली मनोहर जोशी की चिंता

धर्म और आस्था के नाम पर नियम–कानूनों को ताक पर रखना, प्रकृति को नुकसान पहुंचाना और आम जनता के जीवन से खिलवाड़ करना, यह विकृति भाजपा राज में इस कदर बढ़ चुकी है कि अब खुद भाजपा को बनाने वाले नेता ही इस पर चिंता प्रकट कर रहे हैं। अभी 19 और 20 सितंबर को उत्तराखंड के बद्रीनाथ के टूरिस्ट अराइवल प्लाजा में दो दिनों के श्देवभूमि सांस्कृतिक महोत्सवश का आयोजन किया गया था। जैसा कि भाजपा में चलन हो चुका है संस्कृति के नाम पर तेज आवाज में गाना–बजाना ही होता है। अभी दो दिन पहले खुद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने दीनदयाल उपाध्याय की जयंती पर भजन क्लबिंग में हिस्सा लिया और बाकायदा ट्वीट किया कि हमारी जेन जी श्भजन क्लबिंगश की ओर बढ़ रही है... यह आध्यात्मिकता और आधुनिकता का एक सुंदर संगम है, जिसमें भजनों की पवित्रता का भी पूरा ध्यान रखा जाता है।

हो सकता है प्रधानमंत्री सामने बैठे थे तो भजनों की पवित्रता का ध्यान रखा गया हो, वर्ना फिल्मी गानों की धुनों पर भजन ही आजकल भक्ति के नाम पर गाए–बजाए जाते हैं। बहरहाल, प्रधानमंत्री का यह ट्वीट बता रहा है कि अभी उन्होंने नयी पीढ़ी से जुड़ने की कोशिशों को छोड़ा नहीं है। हैलो फ्रेंड्स वाला दांव काम नहीं आया तो अब मोदी यह दिखा रहे हैं कि नयी पीढ़ी भाजपा वाले भक्ति मॉडल को अपना रही है, जिसे वो आध्यात्मिकता और आधुनिकता का संगम कह रहे हैं। हालांकि आध्यात्मिकता और आधुनिकता में कभी भी अलगाव नहीं रहा है, दोनों हमेशा साथ चले हैं। लेकिन नरेन्द्र मोदी अलग ही किस्म का दर्शन देश पर थोप रहे हैं जिसमें भक्ति के नाम पर कट्टरता और कर्मकांड ही दिखाई देते हैं। इसलिए सड़क पर तो छोड़िए अपने घर में भी कोई नमाज पढ़े तो उस पर मामला दर्ज होता है, लेकिन हिंदू त्योहार मनाने के लिए फूहड़ता से निकाले गए जुलूसों पर फूल बरसाए जाते हैं। धर्म के इस दिखावे में धर्म का नुकसान तो हो रहा है, सदियों से धर्म की रक्षा करने वाले तीर्थों को भी नुकसान पहुंच रहा है। बद्रीनाथ में सांस्कृतिक महोत्सव इसी की एक मिसाल है। इस महोत्सव के दौरान तेज संगीत, डीजे और लोगों के नाचने के वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गए, जिस पर हिमालय प्रेमी और बद्रीनाथ के प्रति श्रद्धा रखने वाले कई लोगों ने कड़ी आपत्ति जताई। यहां तक कि भाजपा के वरिष्ठ नेता और विज्ञान के शिक्षक



रहे मुरली मनोहर जोशी ने भी सोशल मीडिया पर इस आयोजन की तीखी आलोचना करते हुए लिखा, श्बद्रीनाथ धाम में संगीत समारोह को छूट दिया जाना न सिर्फ सांस्कृतिक मर्यादाओं का उल्लंघन है बल्कि धाम की पवित्रता पर भी सीधा आघात है। आदि गुरु शंकराचार्य महाराज जी द्वारा इस धाम की स्थापना कर ही रहे हैं, साथ में इतनी ऊंचाई पर हजारों लोगों के नाचने से उनके स्वास्थ्य पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों की भी उपेक्षा कर रहे हैं। यह इस बात का प्रतीक है कि अब देवभूमि को बाजारू संस्कृति के रूप में परिणीत किया जा रहा है। जोशीजी की चिंता तो वाजिब है, लेकिन अफसोस इस बात का है कि उन्होंने इस हिमालयी पर्यावरण में शांतिपूर्ण तरीके से भगवत भजन के लिए की थी। गौर करने वाली है कि इस जगह पर शंख बजाना भी मना है लेकिन हम उसे भूलकर शोर–शराबे वाले संगीत कार्यक्रमों का आयोजन कर भारतीय आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, पर्यावरणीय मूल्यों की घोर उपेक्षा तो चिंता को जताने में काफी देर कर दी। 2014 से वे मोदी शासन में इस तरह के तमाशों को देखते आए हैं, लेकिन न जाने क्या मजबूरी रही कि उन्होंने खुलकर कभी आलोचना नहीं की। अब भी वे चाहते तो सीधे मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी को संबोधित कर आलोचना कर सकते थे, लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। हालांकि स्थानीय लोग भी इस आयोजन से खिन्न हैं। यहीं के माणा गांव के पूर्व प्रधान पीताम्बर सिंह मोलफा ने कहा कि हमारा इलाका बहुत ही संवेदनशील है। यहां धार्मिक परंपराओं और स्थानीय लोगों की भावनाओं को समझे बिना कोई भी बड़ा कार्यक्रम करना ठीक नहीं है। उन्होंने याद दिलाया कि चिपको आंदोलन से जुड़े चंडी प्रसाद भट्ट जी जैसे पर्यावरणविदों ने इस क्षेत्र के लिए काफी सुझाव दिए हैं लेकिन मास्टर प्लान तैयार करते समय उनकी बातों को दरकिनार किया गया। मास्टर प्लान के तहत बड़ी–बड़ी मशीनें दिन–रात शोर कर रही हैं, हेली सेवा से जो शोर होता है, उस पर कोई बात नहीं करता। हालांकि अब प्रशासन कह रहा है कि भविष्य में बद्रीनाथ में ऐसे किसी भी कार्यक्रम पर रोक लगाई गई है। लेकिन उसे जवाब देना चाहिए कि पहले ही यह सब क्यों नहीं रोका गया। प्रदूषण से केवल बद्रीनाथ नहीं केदारनाथ धाम भी ग्रस्त है। यहां आई विनाशकारी बाढ़ ने बता दिया था कि किस तरह जरूरत से ज्यादा भीड़ पहुंचने से सारा इको सिस्टम प्रभावित हो रहा है। केदारनाथ क्षेत्र में स्थानीय लोग लंबे समय से पर्यावरण और बढ़ते पर्यटन के दबाव से जुड़ी समस्याओं की ओर ध्यान दिलाते रहे हैं। धाम के आसपास और यात्रा मार्ग पर साल–दर–साल रिकॉर्ड स्तर पर कचरा बढ़ रहा है, जिसका प्रबंधन नहीं हो पा रहा है। पर्यटक अपने पानी की खाली बोतल, खाने–पीने के पैकेट समेत कई सामान खाई में सीधे नीचे फेंक देते हैं जिसे इकट्ठा करना असंभव है। यह इस संवेदनशील हिमालयी क्षेत्र के पर्यावरण के लिए एक गंभीर चेतावनी है। कचरे के बढ़ने के कारण भारी बारिश में हालात और बिगड़ जाते हैं। अभी रुद्रप्रयाग में ही लैंडस्लाइड होने की वजह से चारधाम यात्रा रोकनी पड़ी।

महिलाओं में हृदय रोग के लक्षण पुरुषों से क्यों होते हैं अलग ? जानिए इसके कारण

हृदय रोग महिलाओं और पुरुषों, दोनों को प्रभावित कर सकते हैं। हालांकि, महिलाओं में हृदय रोग के लक्षण पुरुषों से अलग हो सकते हैं। यह लेख इस बात पर केंद्रित है कि क्यों महिलाओं में हृदय रोग के लक्षण अलग होते हैं और इसे समझना क्यों जरूरी है। महिलाओं में हृदय रोग के लक्षण अक्सर ध ाड़कन तेज होना, सांस लेने में कठिनाई, थकान और चक्कर आना जैसे होते हैं। आइए इसके विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से चर्चा करें।

हार्मोनल बदलाव का असर

महिलाओं में हार्मोनल बदलाव हृदय स्वास्थ्य पर गहरा असर डालते हैं। मेनोपॉज के बाद एस्ट्रोजन का स्तर घटता है, जिससे हृदय रोग का खतरा बढ़ सकता है। एस्ट्रोजन दिल की धमनियों को सुरक्षित रखने में मदद करता है। इस दौरान हार्मोनल असंतुलन भी महिलाओं को हृदय रोगों की ओर ले जा सकता है। इसके अलावा गर्भावस्था और मासिक धर्म के दौरान भी हार्मोनल बदलाव होते



हैं, जो हृदय स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकते हैं।

लक्षण पहचानने में मुश्किल

महिलाओं में हृदय रोग के लक्षण अक्सर अस्पष्ट होते हैं, जिससे पहचानना मुश्किल हो जाता है। स्तन दर्द, पेट दर्द, थकान और चक्कर आना जैसे लक्षण आम समझे जाते हैं, लेकिन ये हृदय रोग के संकेत हो सकते हैं। इस कारण महिलाएं डॉक्टर की सलाह लेने में देरी कर देती हैं, जिससे स्थिति बिगड़ सकती है। इसलिए, इन लक्षणों को नजरअंदाज न करें और समय पर चिकित्सा सहायता प्राप्त करें।

मानसिक तनाव का असर

मानसिक तनाव भी महिलाओं के हृदय रोगों का एक बड़ा कारण हो सकता है। कामकाजी महिलाएं, घर की जिम्मेदारियां निभाने वाली महिलाएं या अन्य किसी कारणवश मानसिक तनाव का सामना करने वाली महिलाएं हृदय रोगों के जोखिम में होती हैं। मानसिक तनाव से रक्तचाप बढ़ सकता है, जिससे दिल पर दबाव पड़ता है और हृदय रोग होने की संभावना बढ़ जाती है। इसलिए, मानसिक स्वास्थ्य का ध्यान रखना बहुत जरूरी है।

अन्य स्वास्थ्य समस्याओं का जुड़ाव

महिलाओं में हृदय रोग होने पर अन्य कई स्वास्थ्य समस्याएं भी जुड़ सकती हैं, जैसे मधुमेह, उच्च रक्तचाप और मोटापा आदि। ये समस्याएं हृदय रोग के खतरे को बढ़ा सकती हैं और इलाज को जटिल बना सकती हैं। इसलिए, महिलाओं को अपनी सभी स्वास्थ्य समस्याओं पर ध्यान देना चाहिए और नियमित जांच करवानी चाहिए ताकि समय पर सही उपचार मिल सके। इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि महिलाओं में हृदय रोग के लक्षण अलग होते हैं।

हर समय परफेक्ट दिखने का दबाव ? मिर्जापुर एक्ट्रेस हर्षिता गौर ने बताया कैसे करती हैं डील

मिर्जापुर फेम एक्ट्रेस हर्षिता गौर ने बताया कि वह हर समय परफेक्ट दिखने के लगातार दबाव से कैसे निपटती हैं। हर्षिता ने कहा कि यह पूरी तरह से व्यक्ति पर निर्भर करता है कि वह दबाव लेना चाहता है या अपनी असलियत में सहज रहना चाहता है। उन्होंने आगे कहा कि आज के समय में, दर्शक अलग–अलग तरह के शरीर और स्किन टाइप को स्वीकार करने लगे हैं, बशर्ते वे उस किरदार के अनुकूल हों जिसे वे निभा रहे हैं। हर्षिता ने कहा कि एक एक्टर के तौर पर अगर रोल की मांग हो तो उन्हें अपने लुक के साथ एक्सपेरिमेंट करने में कोई दिक्कत नहीं है। उन्होंने कहा कि यह इंडस्ट्री में होने का एक मजेदार हिस्सा है। हर्षिता ने बताया, मैं एक्सपेरिमेंट करने के लिए तैयार रहती हूं, खासकर अगर किरदार की मांग हो। यह मजेदार है। हम इसी फील्ड में इसलिए हैं क्योंकि हमें एक्सपेरिमेंट करने का मौका मिलता है। वरना, हम यहां नहीं होते। हमेशा कैमरे के लिए तैयार रहने के दबाव से निपटने के बारे में बात करते हुए उन्होंने कहा, दबाव तो होता है, लेकिन आप या तो उस दबाव को ले सकते हैं या नहीं। मुझे लगता है कि यह पूरी तरह आप पर निर्भर करता है। हर्षिता ने कहा, एक दौर वह भी था जब न तो सोशल मीडिया का ऐसा दौर था और न ही लोग अपनी शारीरिक बनावट को लेकर इतने सचेत थे, लेकिन उस समय भी लोगों पर सामाजिक अपेक्षाओं का दबाव कम नहीं था। उन्होंने आगे कहा कि ऐसे कई शो हैं जिनमें जाने–माने एक्टर मेकअप भी नहीं करते, क्योंकि किरदार की यही मांग होती है। बॉलीवुड एक्ट्रेस करीना कपूर का उदाहरण देते हुए हर्षिता ने कहा, करीना कपूर ने एक फिल्म की थी जिसमें उन्होंने मेकअप नहीं किया था। मुझे लगता है कि जब किरदार की मांग होती है, तो लोग खुद को वैसा ही दिखाने में ज्यादा सहज हो गए हैं जैसे वे असल में हैं।



ईशा मालवीय का बड़े पर्दे पर पदार्पण, गुरमीत चौधरी के साथ तुम मेरे हो में आएंगी नजर, प्रेम–कहानी के साथ रोमांच और साहस

टेलीविजन अभिनेत्री ईशा मालवीय अब बड़े पर्दे पर अपने अभिनय करियर की शुरुआत करने जा रही हैं। लोकप्रिय टेलीविजन कार्यक्रम शबिग बॉस 17च्य से चर्चा में आईं ईशा की पहली फिल्म श्तुम मेरे होच्य का आधिकारिक ऐलान कर दिया गया है। फिल्म में उनके साथ अभिनेता गुरमीत चौधरी मुख्य भूमिका में नजर आएंगे। ईशा ने अपने सामाजिक माध्यम खाते पर फिल्म का पहला पोस्टर साझा करते हुए इसकी जानकारी दी। फिल्म के पोस्टर में ईशा मालवीय और गुरमीत चौधरी के बीच रोमांटिक अंदाज दिखाई दे रहा है। पोस्टर सामने आने के बाद दोनों कलाकारों के प्रशंसकों में फिल्म को लेकर उत्सुकता बढ़ गई है। फिल्म का निर्देशन आशीष पांडा ने किया है। श्तुम मेरे होच्य को एक रोमांटिक प्रेम–कहानी के साथ–साथ कार्रवाई और रोमांच से भरपूर फिल्म बताया गया है। फिल्म में प्रेम और रिश्तों की कहानी के साथ साहसिक घटनाक्रम भी देखने को मिलेगा। निर्माताओं के मुताबिक, फिल्म दर्शकों को भावनात्मक जुड़ाव के साथ मनोरंजन का भी अनुभव कराएगी। फिल्म का निर्माण रेवा क्रिएटिव हाउस और देबगुरु फिल्म्स के बैनर तले किया गया है। आरती एस और गुरमीत चौधरी की पत्नी एवं अभिनेत्री देबिना बनर्जी फिल्म की निर्माता हैं। श्तुम मेरे होच्य के जरिए ईशा मालवीय हिंदी सिनेमा में कदम रख रही हैं। फिल्म में गुरमीत चौधरी उनके सह–कलाकार होने के साथ ही इस परियोजना से बतौर निर्माता भी जुड़े हैं। फिल्म के पोस्टर में दोनों की जोड़ी को रोमांटिक अंदाज में पेश किया गया है। टेलीविजन से लोकप्रियता हासिल करने के बाद ईशा के बड़े पर्दे पर पदार्पण को लेकर उनके प्रशंसकों में खासा उत्साह है।

संस्कार को लेकर पहले थोड़ी झिझक में थीं मुग्धा गोडसे

एक्ट्रेस मुग्धा गोडसे इन दिनों अपने नए प्रोजेक्ट संस्कार को लेकर चर्चा में हैं। इस शो में वह अपने अब तक के ग्लैमरस अंदाज से बिल्कुल अलग एक साधारण गृहिणी के किरदार में नजर आ रही हैं। उन्होंने बताया कि जब उन्हें पहली बार इस प्रोजेक्ट का ऑफर मिला था, तो वह इसे लेकर थोड़ी झिझक में थीं लेकिन कहानी ने उनका ध्यान अपनी ओर खींचा। मुग्धा ने कहा, मैंने पहले कभी इस तरह का किरदार नहीं किया था, इसलिए ऑफर मिलने पर मेरे मन में थोड़ी हिचक थी। शो की कहानी ऐसी थी जिसने मुझे इसके बारे में और जानने के लिए उत्सुक किया। एक एक्टर के तौर पर मैं खुद को नए किरदारों में आजमाना चाहती थीं और कुछ ऐसा करना चाहती थीं, जो मेरे लिए एक चौलेंज हो। मुग्धा ने कहा, शूटिंग शुरू होने के बाद मेरी शुरुआती झिझक पूरी तरह दूर हो गई। जैसे–जैसे मैं प्रोजेक्ट का हिस्सा बनती गईं, मुझे महसूस हुआ कि इसे करने का फैसला सही था। इस तरह के शो बहुत कम देखने को मिलते हैं, इसलिए मैं इसका हिस्सा बनकर खुश हूं। जब मुझे पता चला कि इसे डीडी नेशनल के साथ–साथ उनके डिजिटल प्लेटफॉर्म वेव्स ओटीटी पर भी टेलीकास्ट किया जाएगा, तो मेरी खुशी और बढ़ गई। मुग्धा गोडसे ने डीडी नेशनल से अपने जुड़ाव को भी खास बताया। उन्होंने कहा, यह भारत के सबसे पुराने और लोकप्रिय चौनलों में से एक है। हम सभी डीडी देखते हुए बड़े हुए हैं।



बॉक्स ऑफिस पर हनुमान अंश ने 49 दिन मारी छलांग, पहुंची 300 करोड़ के करीब, मिर्जापुर द मूवी भी 200 करोड़ के पार

निर्देशक डॉ. विशाल चतुर्वेदी की फिल्म श्हनुमान अंशच्य भारतीय बॉक्स ऑफिस पर 300 करोड़ रुपये का आंकड़ा छूने की ओर बढ़ रही है। नीम करौली बाबा के जीवन पर आधारित इस फिल्म ने सिनेमाघरों में 49 दिन पूरे कर लिए हैं। फिल्म ने अब तक भारत में 288.33 करोड़ रुपये की शुद्ध कमाई कर ली है। दुनियाभर में फिल्म का कुल सकल कारोबार 377.05 करोड़ रुपये पहुंच गया है। इसमें विदेशों से हुई 36.50 करोड़ रुपये की सकल कमाई भी शामिल है। फिल्म की शुरुआत सिनेमाघरों में अपेक्षाकृत धीमी रही। पहले दो सप्ताह में इसकी कमाई सीमित रही, लेकिन तीसरे सप्ताह में फिल्म के कारोबार में अचानक तेजी आई। दर्शकों के बीच फिल्म की चर्चा बढ़ने के साथ ही इसकी कमाई में भी लगातार इजाफा देखने को मिला। शुरुआती दौर में करीब 1.48 करोड़ रुपये की दैनिक कमाई करने वाली फिल्म बाद में 10 करोड़ रुपये से अधिक का कारोबार करने में सफल रही। चौथे सप्ताह में भी फिल्म ने अपनी मजबूत पकड़ बनाए रखी। महज तीन दिनों में फिल्म ने 28.25 करोड़ रुपये की कमाई कर ली। फिल्म में शोभिनव सत्या और चंदन आनंद ने प्रमुख भूमिकाएं निभाई हैं। भावनात्मक कहानी और कलाकारों के प्रभावी अभिनय को दर्शकों की ओर से पसंद किया गया है। फिल्म की कहानी ने अलग–अलग आयु वर्ग के दर्शकों को प्रभावित किया है, जिसका असर इसके लंबे समय तक बने कारोबार पर दिखाई दे रहा है। वहीं, शमिर्जापुर द मूवीच्य भी बॉक्स ऑफिस पर 200 करोड़ रुपये के कारोबार का आंकड़ा पार कर चुकी है। फिल्म ने गुरुवार को 21वें दिन 1.50 करोड़ रुपये की कमाई की। इससे एक दिन पहले 20वें दिन फिल्म ने 1.75 करोड़ रुपये का कारोबार किया था। फिल्म का कुल शुद्ध घरेलू कारोबार अब 223 करोड़ रुपये पहुंच चुका है। श्हनुमान अंशच्य और शमिर्जापुर द मूवीच्य दोनों ही फिल्मों ने लंबे समय तक सिनेमाघरों में दर्शकों की रुचि बनाए रखी है और लगातार कमाई कर रही हैं।

परफ्यूम लगाते समय इन बातों का रखें खास ध्यान, मिलेगा अच्छा परिणाम

परफ्यूम लगाना एक कला है, जो आपके व्यक्तित्व को और भी खास बना सकती है। सही तरीके से परफ्यूम लगाने से आप पूरे दिन ताजगी महसूस कर सकते हैं और दूसरों पर अच्छा प्रभाव छोड़ सकते हैं। इस लेख में हम आपको परफ्यूम लगाने के कुछ आसान और प्रभावी तरीके बताएंगे, जिनसे आप अपने दिन की शुरुआत ताजगी के साथ कर सकते हैं और पूरे दिन खुशबू भी बनी रहेगी।

त्वचा की सफाई करें

परफ्यूम लगाने से पहले अपनी त्वचा को अच्छे से साफ करें। साबुन और पानी से नहाने के बाद ही परफ्यूम लगाना चाहिए, ताकि आपकी त्वचा पर कोई गंदगी या तेल न हो। इससे परफ्यूम की खुशबू बेहतर तरीके से चिपकती है और लंबे समय तक रहती है। अगर आप शॉवर जेल का इस्तेमाल करते हैं तो उसे सूखने दें और फिर परफ्यूम लगाएं। यह तरीका आपकी त्वचा को ताजगी भरा महसूस कराएगा और खुशबू लंबे समय तक बनी रहेगी।

सही जगह चुनें

परफ्यूम लगाने के लिए सही जगह चुनना बहुत जरूरी है। आमतौर पर गर्दन, कलाई, कान के पीछे और घुटनों के पीछे परफ्यूम लगाना अच्छा रहता है। इन जगहों



पर खून का बहाव ज्यादा होता है, जिससे खुशबू लंबे समय तक बनी रहती है। इन्हीं जगहों पर परफ्यूम लगाने से आप पूरे दिन ताजगी महसूस कर सकते हैं और दूसरों पर अच्छा प्रभाव छोड़ सकते हैं। सही जगह पर परफ्यूम लगाने से आपकी खुशबू पूरे दिन बनी रहती है।

सही मात्रा में उपयोग करें

परफ्यूम लगाते समय सही मात्रा का ध्यान रखना जरूरी है। ज्यादा परफ्यूम लगाने से उल्टा असर हो सकता है और आपको असहज महसूस हो सकता है। सामान्यतरू 2–3 स्प्रे पर्याप्त होते हैं। इसे अपनी कलाई, गर्दन और कान के पीछे हल्के से लगाएं और जरूरत पड़ने पर दिनभर में एक बार फिर से स्प्रे करें। इससे आप ताजगी भरा महसूस करेंगे और खुशबू पूरे दिन बनी रहेगी। सही मात्रा में परफ्यूम लगाना आपकी त्वचा को आरामदायक बनाएगा।

परफ्यूम को त्वचा पर न रगड़ें

परफ्यूम को त्वचा पर रगड़ना नहीं चाहिए, क्योंकि इससे इसकी खुशबू कम हो जाती है और त्वचा पर जलन भी हो सकती है। परफ्यूम को हमेशा हल्के हाथों से स्प्रे करें या डॉट करें, ताकि यह सही तरीके से त्वचा में समा जाए। इससे परफ्यूम की खुशबू लंबे समय तक बनी रहती है और आपको असहज महसूस नहीं होता। सही तरीके से परफ्यूम लगाने से आप ताजगी भरा महसूस करेंगे और खुशबू पूरे दिन बनी रहेगी।

कपड़ों पर न लगाएं

कपड़ों पर परफ्यूम लगाने से धब्बे हो सकते हैं या कपड़े खराब हो सकते हैं, इसलिए इसे सीधे त्वचा पर लगाना चाहिए। अगर आप कपड़ों पर परफ्यूम लगाना चाहते हैं तो पहले इसे किसी हल्के कपड़े पर टेस्ट करें, ताकि कोई नुकसान न हो। इस तरह आप आसानी से दिनचर्या में परफ्यूम लगाकर ताजगी भरा महसूस कर सकते हैं और खुशबू पूरे दिन बनी रहेगी। इन सरल तरीकों को अपनाकर आप अपनी खुशबू को लंबे समय तक बना सकते हैं।

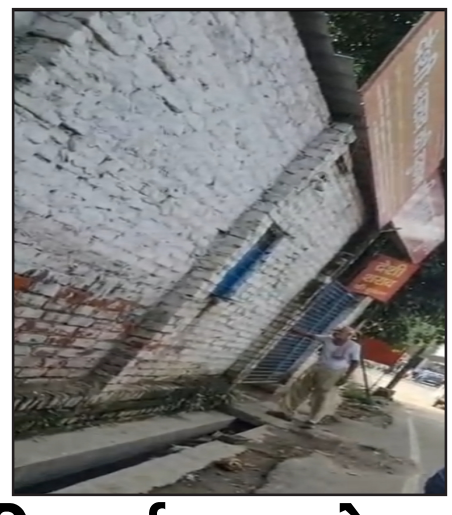
हुसड़िया के पास देसी शराब की दुकान पर नियमों के उल्लंघन के आरोप, आबकारी विभाग की कार्यशैली पर सवाल

दार्शनिक समाचार

लखनऊ। गोमतीनगर क्षेत्र में हुसड़िया पुलिस चौकी के निकट संचालित देसी शराब की दुकान को लेकर आबकारी नियमों के उल्लंघन के आरोप सामने आए हैं। स्थानीय स्तर पर आरोप लगाया जा रहा है कि दुकान का संचालन निर्धारित समय से पहले शुरू हो जाता है और शराब की बिक्री निर्धारित मूल्य से अधिक कीमत पर किए जाने की शिकायतें भी हैं। आरोप है कि दुकान पर कथित तौर पर सुबह करीब 4 बजे से ही शराब की बिक्री शुरू कर दी जाती है। इसके अलावा 90 रुपये मूल्य वाली शराब को 110 रुपये तथा कभी-कभी 120 रुपये में बेचे जाने की बात भी कही जा रही है। हालांकि, इन आरोपों की स्वतंत्र पुष्टि नहीं हुई है।

मामले को लेकर आबकारी निरीक्षक गोमतीनगर की कार्यशैली पर भी सवाल उठ रहे हैं। शिकायतकर्ताओं का कहना है कि दुकान के संबंध में पहले भी आबकारी विभाग और समाचार माध्यमों के जरिए मामला उठाया जा चुका है, बावजूद इसके कथित अनियमितताओं पर प्रभावी कार्रवाई नहीं दिखाई दे रही है। सवाल यह है कि यदि निर्धारित समय के बाद शराब की बिक्री पर नियम लागू हैं, तो सुबह निर्धारित समय से पहले बिक्री की शिकायतों पर विभाग की ओर से क्या कार्रवाई की गई? साथ ही निर्धारित मूल्य से अधिक कीमत वसूले जाने के आरोपों की जांच क्यों नहीं कराई जा रही है?

स्थानीय लोगों का कहना है कि यदि शिकायतें सही हैं तो आबकारी विभाग को दुकान की जांच कर नियमों के उल्लंघन की स्थिति स्पष्ट करनी चाहिए। वहीं, यदि आरोप निराधार हैं तो विभाग जांच के माध्यम से स्थिति साफ कर सकता है। अब देखना यह है कि आबकारी विभाग हुसड़िया क्षेत्र की इस शराब दुकान को लेकर सामने आ रही शिकायतों पर क्या कार्रवाई करता है।



विरोध राजा भैया की नहीं सनातन और सनातन प्रहरियों का है

दिव्य अग्रवाल (लेखक व विचारक)

GEN G के नाम पर यदि गालियां देना, नग्नता के साथ सड़को पर रहना, सार्वजनिक रूप से अतरंगी होना, देश की सेना के प्रति अनुचित शब्दावली का उपयोग करना यदि माता पिता को स्वीकार्य है तो इसमें युवाओं से ज्यादा दोषी उनके माता पिता है । मश्वडर्न दिखने का यह नया प्रारूप आया है की अभद्रता और बेहूदगी का नंगा नाच करो तभी तुम पाश्चात्यकरण की आधुनिकता वाली पीढ़ी कहलाओगे । कुंडा विधायक रघुराज प्रताप सिंह उर्फ़ राजा भैया ने अति संवेदनशील लेकिन गंभीर विषय पर अपनी बात रखी और सत्य कहा अभद्रता,अशोभनीयता, अमर्यादा और नग्नता, सनातनी युवा पीढ़ी का आचरण नहीं हो सकता हाँ यह बात सत्य है की जब कुछ अमर्यादित लोगो को फंडिंग करके देश के प्रधानमंत्री के प्रति अपशब्द का उपयोग किया और करवाया जा सकता है तो वे धूर्त षड्यंत्कारी राष्ट्र विरोधी लोग, सनातन धर्म की एकता और अखंडता की बात कहने पर राजा भैया के विरुद्ध षड्यंत्र निश्चित करेंगे । जब कुत्ते की पूँछ पर दवाब पड़ता है तो वह भौकता अवश्य है इसलिए जिन लोगो के विरुद्ध राजा भइया ने मुखरता से अपनी बात कही है तो उन लोगो का अमर्यादित आचरण करना और करवाना स्वाभाविक है विरोध किसी एक व्यक्ति का नहीं बल्कि जो भी व्यक्ति सनातन को समर्पित होगा यह तथाकथित गैंग उन सबके विरुद्ध तुरंत एक्टिव कराया जाएगा।



लखनऊ विश्वविद्यालय में अभाविप का प्रदर्शन, कुलपति कार्यालय का घेराव

लखनऊ। छात्रहित से जुड़े लंबे समय से लंबित मुद्दों के समाधान की मांग को लेकर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) की लखनऊ विश्वविद्यालय इकाई ने सोमवार को सैकड़ों कार्यकर्ताओं एवं विद्यार्थियों के साथ कुलपति कार्यालय का घेराव किया। प्रदर्शन के दौरान छात्रावास, मेस, स्वच्छता, पेयजल, पुस्तकालय, साइबर लाइब्रेरी और शोधार्थियों से जुड़े विभिन्न मुद्दे उठाए गए।

अभाविप की ओर से विश्वविद्यालय प्रशासन को सौंपे गए ज्ञापन में छात्रावासों में भोजन एवं मेस व्यवस्था में सुधार, स्वच्छता और पेयजल की समुचित व्यवस्था, आवश्यक मरम्मत कार्य तथा पुस्तकालय एवं साइबर लाइब्रेरी में पुस्तकों, ई-जर्नल और इंटरनेट सुविधा उपलब्ध कराने की मांग रखी गई।



PhD शोधार्थियों से जुड़े मुद्दों पर कमिटी गठित करने पर सहमति बनी। इसमें इंस्टीट्यूशनल आईडी, चीफ कश्वमन रूम, विभागीय पुस्तकालय और छात्रावास से जुड़े विषय शामिल हैं। कमिटी में विद्यार्थियों को भी शामिल किए जाने और ''30 सितंबर तक निर्णय कुलपति के समक्ष प्रस्तुत करने की बात कही गई।

इसके अलावा ललित कला संकाय एवं विजुअल आर्ट्स के विद्यार्थियों के लिए कंप्यूटर लैब, आवश्यक उपकरण और अन्य प्रशासनिक समस्याओं के समाधान की मांग भी उठाई गई। विश्वविद्यालय प्रशासन ने अभाविप की प्रमुख मांगों पर आवश्यक कार्रवाई का आश्वासन दिया।

अभाविप अवध प्रांत के प्रांत मंत्री अर्पण कुशवाहा ने कहा कि सैकड़ों कार्यकर्ताओं एवं विद्यार्थियों ने एकजुट होकर छात्रहित के मुद्दे प्रशासन के सामने रखे। उन्होंने कहा कि मांगों पर सहमति बनी है और अब निर्धारित समयसीमा में उनके प्रभावी क्रियान्वयन की जरूरत है।

लखनऊ विश्वविद्यालय इकाई की उपाध्यक्ष वर्तिका ने कहा कि मेस, स्वच्छता, पेयजल, पुस्तकालय और शोधार्थियों से जुड़े मुद्दे विद्यार्थियों के दैनिक जीवन एवं अध्ययन से सीधे जुड़े हैं। वहीं इकाई मंत्री आर्यन कुशवाहा ने कहा कि चीफ शोधार्थियों से जुड़े विषयों पर विद्यार्थियों की भागीदारी और 30 सितंबर तक निर्णय प्रस्तुत करने पर सहमति बनी है।

प्रदर्शन में आर्यन शर्मा, अमन दुबे, सौम्य शुक्ला, कविता, नंदिनी, सिद्धार्थ, प्रत्युष, विवेक, शक्ति, शिवम, अक्षय, विनायक, दिव्यांशु सहित सैकड़ों कार्यकर्ता एवं विद्यार्थी मौजूद रहे।

आतंकवाद का मजहब नहीं पर चोरों का धर्म पता कर लिया

दिव्य अग्रवाल (लेखक व विचारक)

राजनिति से पहले धर्म ये बात मुसलमान तो जानता है पर हिन्दू नहीं इसलिए सेकुलरवादी हिन्दू ही इस्लामिक जिहादियों की भाँती कार्य कर रहा है। आतंकवाद का कोई धर्म नहीं होता, सैकड़ो वर्षो पूर्व श्री राम मंदिर तोड़ने वाले, ज्ञानवापी तोड़ने वाले असंख्य मंदिरो को तोड़कर मस्जिद बनाने वालो में जिन्हे मुसलमान नहीं विदेशी आक्रांता दीखते थे । जिन लोगो को वक्फ बोर्ड द्वारा अवैध रूप से कब्जाई हुई सम्पत्तियों में अपराधियों का मजहब नहीं दिखाई देता उन्ही सेक्युलर हिन्दुओ ने श्री राम मंदिर के कुछ चोरो को सनातन धर्म से जोड़कर सनातन धर्म को, साधू संतो को, प्रभु श्री राम मंदिर की ख्याति को कलंकित करने का कुत्सित प्रयास किया है। ओवैसी कह रहे हैं की यदि ट्रस्ट में मुसलमान होते तो यह चोरी न होती देखा जाय तो वो सही ही कह रहे हैं क्यूंकि जिस दिन मंदिर के अंदर ओवैसी जैसे इस्लामिक लोग पहुँच गए उस दिन वक्फ बोर्ड की तरह सारी संपत्तियों पर ही कब्जा कर लेंगे तो चोरी की बात ही समाप्त हो गयी ।

अब बात पप्पू यादव की जो उन रामगोपाल यादव जी को पिता तुल्य बताते हैं जिन्होंने 90 के दशक में सदन में स्पष्ट भाषण दिया था की हमारी पाटह्व मुसलमानो की पाटह्व है और बाबरी को बचाने हेतु हिन्दुओ पर जो गोलियां चलवानी पड़ी उसका पाटह्व और सरकार को कोई ग्लानि नहीं वो पप्पू यादव भगवा वस्त्र पहनकर सपा सांसद अवधेश प्रसाद के पैरो में सिर्फ अपना माथा ही नहीं बल्कि प्रभु श्री राम का चित्र भी रख देते हैं । पप्पू यादव अनेको बार इस्लाम कुरआन और अल्लाह के प्रति अपना समर्पण और प्रेम सार्वजनिक मंचो से बयान कर कह चुके हैं की यह उनका दुर्भाग्य है की उन्होंने अब तक इस्लाम स्वीकार नहीं किया तो ऐसे व्यक्ति को प्रभु राम मंदिर से क्या ही आत्मीयता हो सकती है ।

अयोध्या क्षेत्र फैजाबाद से सांसद अवधेश प्रसाद स्वयं को पासी समाज का नेता बताते हैं क्या पासी समाज इस बात को स्वीकार्यता दे सकता है की उनके आराध्य प्रभु श्री राम का चित्र अवधेश जी के पैरो तले जमीन में रगड़ा जाय और अवदेश जी प्रसन्न होकर इस कु त्य को करने वाले को आशीर्वाद दें , ब्राह्मण समाज का आज भी बड़ा हिस्सा कांग्रेस को अपना मानता है तो क्या यह स्वीकार किया जा सकता है की राहुल गांधी भी उन लोगो का समर्थन करें जो लोग धर्म ज्ञाताओं को चोर घोषित करने में लगे हुए हैं ।

निश्चित ही यह सब धरना प्रदर्शन चोरो के लिए नहीं बल्कि सनातनी युवा पीढ़ी में धर्म के प्रति उदासीनता का बीजारोपण करने के उद्देश्य से किया जा रहा है ।

पुष्प वाटिका में योगशक्तियोगपुरुष का दिव्य मिलन

- राम-सीता प्रथम दर्शन से भावविभोर हुआ जनकपुर
- देखन बागु कुअँर दुइ आए। बय किसोर सब भाँति सुहाए
- स्याम गौर किमि कहौं बखानी। गिरा अनयन नयन बिनु बानी

आज २१७ दोहे से २३८ दोहे के आगे की चौपाई बंधु बचन सुनि प्रभु मुसुकाने। होइ सुचि सहज पुनीत नहानेघ तक का पाठ किया गया।

एक सखी दूसरे सखी से कहती है,ष्दो राजकुमार बाग देखने आए हैं जो किशोर अवस्था के हैं और सब प्रकार से सुंदर हैं। वे साँवले और गोरे रंग के हैं, उनके सौंदर्य को मैं कैसे बखानकर कहूँ जीभ को आंखे नही, औ आंख को जीभ नहीष,, ऐसा जीवंत बाबा तुलसी जी ने लिखा हैं उतना ही जीवंत रामनगर की रामलीला है।

आज की लीला तो रुभागवत-रास-अध्याय ही समझिए जो बाबा जी ने आज के रुफुलवारी-लीला में लिख दिया है। बाबा लिखते है प्रीति पुरातन लखई न कोई। अर्थात प्रेम रास यहां भी हो रहा ही परंतु इस प्रेम को कोई लख नही सकता।

।आज की लीला में पुष्प वाटिका में योगशक्ति और योगपुरुष के मिलन को ऐसे ऐसे अलंकारों छंदों में लिखा है की मानो मानस के चौपाई में सरस्वती जी ने स्वयं अपने ज्ञान को अवतरित कर दिया हो ।

आज के कथा में भगवान राम,लक्ष्मण जी के साथ गुरु विश्वामित्र जी से आज्ञा लेकर जनकपुर को देखने आते है। जनकपुर के सभी नर नारी बालक वृंद उनको देखकर मोहित हो जाते हैं। कुछ बालक उनके साथ होकर जनकपुर दिखाने लगते है तभी झरोखों से जनकपुर की युवतियां दोनों भाई को देखकर आपस में बात करती है। कोई कहती है,इनके रूप सभी देवताओं से सुंदर है ।कोई उनको पति के रूप में तो कोई भगवान के रूप में देखती है,,कुछ कहती है ये इतने कोमल है शिव धनुष को कैसे तोडेंगे? कुछ कहती इनको देखकर महाराज अपनी प्रतिज्ञा ही भूल जाएंगे तो कुछ कहती ये हम लोगो के भाग्य से यहां आए है और इनका विवाह सीता जी के साथ ही होगा और और इस नाते से ये बार बार यहां आयेंगे तो हमे इनका दर्शन मिलता रहेगा तो एक कहती हैं सिया सोने की अंगूठी,राम सांवरो नगीना हैं। आज की लीला मे सभी लीला प्रेमी अष्ट सखी का संवाद सुनने के लिए बहुत व्याकुल रहते है। आज की लीला में एक अलग ही श्रृंगार और भक्ति रस दिखता है जिसको शब्दो में लिखना ही बहुत कठिन हो जाता है। आगे की कथा देखे तो उसके बाद राम जी लक्ष्मण जी के साथ गुरुजी के आश्रम चले जाते है।। फिर गुरु जी के पूजा के लिए वो फूल लेने पुष्प वाटिका में जाते है।



अनोखी बात यह होती है रामनगर लीला की, पुष्प वाटिका भी ऐसी सजीव होती है जैसे मानो सच में माता जानकी और प्रभु श्री राम के दर्शन करने त्रेतायुग में चले गए हो। कथा को देखे तो जब पुष्प वाटिका में माता सिया से राम जी की भेट होती है तो उस पल की व्याख्या करने में भी शारदा जी कि भी मती हिचकती हो उसके बाद सभी सखियां सीता जी के साथ गौरी पूजन करने जाती हैं तब देवी सिया अपने लिए वर के रूप में राम जी को मांगती हैं तब अकाशवाणी होती है कि आपने जो वर मांगा है वैसा ही आपको वर मिलेगा तत्पश्चात सभी महल में जाते है और रामजी भी गुरु के आश्रम लौट जाते है ।आज की कथा का यही विश्राम हो जाता है और प्रतिदिन की तरह राम आरती होती हैं और आज की आरती रामलीला में आए एक संत के द्वारा होती हैं।

हिंदी ने राष्ट्रीय संवाद को दी मजबूती, राजभाषा के रूप में निभाई महत्वपूर्ण भूमिका: पोस्टमास्टर जनरल कृष्ण कुमार यादव

वाराणसी -हिंदी एक समृद्ध, सशक्त और अभिव्यक्ति की ष्टि से सक्षम भाषा है। राजभाषा के रूप में हिंदी ने राष्ट्रीय स्तर पर संवाद स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आवश्यकता इस बात की है कि हम हिंदी को केवल हिंदी दिवस या पखवाड़ा तक सीमित न रखें, बल्कि ज्ञान, व्यवहार, प्रशासन, तकनीक और सृजन के विभिन्न क्षेत्रों में इसके स्वाभाविक एवं प्रभावी प्रयोग को निरंतर बढ़ावा दें। उक्त उद्गार वरिष्ठ साहित्यकार एवं उत्तर गुजरात परिक्षेत्र के पोस्टमास्टर जनरल श्री ष्ण कुमार यादव ने 28 सितंबर, 2026 को क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद में आयोजित शहिंदी पखवाड़ाश समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह की अध्यक्षता करते हुए व्यक्त किये। इस अवसर पर हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को उन्होंने हिंदी पुस्तकें और प्रशस्ति पत्र देकर पुरस्त किया।



पोस्टमास्टर जनरल ष्ण कुमार यादव ने कहा कि हिंदी की मधुरता में 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना निहित है और इसकी सरलता में गहन ज्ञान समाहित है। हिंदी को परिवर्तन और विकास की भाषा के रूप में नया आयाम मिला है। हिंदी की सबसे बड़ी ताकत इसके बोलने वालों की विशाल संख्या है। हमें हिंदी पर गर्व है, क्योंकि यह न केवल हमारी मातृभाषा व राजभाषा है, बल्कि हमारी संस्ति, सभ्यता और आत्मसम्मान का प्रतीक भी है। अत: हिंदी को अपनाना, उसका प्रयोग करना और उसके विकास में सहभागी बनना प्रत्येक भारतीय का कर्तव्य है।

हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित विभिन्न कार्यक्रम के विजेताओं को पोस्टमास्टर जनरल ष्ण कुमार यादव ने पुरस्त किया। निबंध लेखन प्रतियोगिता में योगेश रामानुज, राजेश कुमार, मौलिक देसाई, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में दर्शन श्रीमाली, सिद्धि दरजी एवं मनीषा बगानी, अनुवाद प्रतियोगिता में मौलिक देसाई, मौलिक दवे एवं कनिका अग्रवाल, हिंदी काव्य पाठ प्रतियोगिता में अभिषेक पीठडीया, योगेश रामानुज, निशा पटेल, हिंदी व्याकरण प्रतियोगिता में हिमांशु प्रजापति, कौशल पटेल, दिलीपकुमार पगी को क्रमश: प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कारसे सम्मानित किया गया। तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता में आर टी पटेल और अभिषेक पीठडीया को प्रथम, रामस्वरूप मंगवा और योगेश रामानुज को क्रमश: द्वितीय व तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। हिंदी अंताक्षरी प्रतियोगिता मे भरत रेगर, कल्पेश परमार, पायल टी पटेल, भावेश भरवाड, सुरेखा देसाई को प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम के दौरान स्वागत भाषण सहायक निदेशक (राजभाषाञ्च अल्पेश शाह, आभार ज्ञापन सहायक निदेश वी एम वहोरा एवं संचालन अभिषेक पीठडीया ने किया। सहायक निदेशक रितुल गांधी, वरिष्ठ लेखाधिकारी पूजा राठोर, सहायक अधीक्षक बिरंग शाह, जीनेश पटेल, रमेश पटेल, रोनक शाह, सहायक लेखाधिकारी सुभाष बारुपाल, रामस्वरूप मंगवा, डाक निरीक्षक पायल पटेल, योगेश पंचोली, रवि रावत, सहित तमाम अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित रहे।

सड़क चौड़ीकरण के नाम पर उत्पीड़न का आरोप

बांदा। सड़क चौड़ीकरण के नाम पर दुकानदारों को हटाए जाने की कार्रवाई को लेकर बबेरू के व्यापारियों में नाराजगी है। व्यापारियों का कहना है कि पहले उन्हें उचित स्थान पर स्थापित किया जाए। इसी बीच सुप्रीम कोर्ट के स्थगन आदेश से व्यापारियों को राहत मिली है। नगर पंचायत ने करीब दस वर्ष पहले कांजी हाउस में 42 दुकानें व्यापारियों को आवंटित की थीं। अब दुकानों को खाली करने का आदेश जारी हुआ है। व्यापारियों का आरोप है कि दुकानें खाली करने का दबाव बनाया जा रहा है। व्यापारियों ने प्रदर्शन कर अंतिम दम तक लड़ाई जारी रखने की बात कही। व्यापारियों ने बताया कि सुप्रीम कोर्ट के स्थगन आदेश की प्रति जिलाधिकारी, एसडीएम और नगर पंचायत को उपलब्ध करा दी गई है।

केन का जलस्तर घटा, यमुना में वृद्धि

बांदा। उफान पर आई केन नदी का जलस्तर चेतावनी बिंदु छूने से पहले ही घटने लगा है। सोमवार को जलस्तर 102.20 मीटर से घटकर 98.10 मीटर पर आ गया। सोमवार को पानी घटने से बाढ़ की आशंका कुछ कम हुई है। प्रशासन ने लोगों को नदियों से दूर रहने और के निर्देश दिए हैं। हालांकि, यमुना का जलस्तर सोमवार को बढ़कर 93.40 मीटर पहुंच गया है। रविवार को यह 93.04 मीटर दर्ज किया गया था। महोबा रोड पर केन नदी के पुल के पास घाट पर जाने वाले रास्ते पर पुलिस ने बैरियर लगा दिया है।

जमीन जबरदस्ती बैनामा कराने वाला व्यक्तिगिरफ्तार

बांदा पुलिस अधीक्षक पलाश बंसल के निर्देशन में जनपद में अपराध एवं अपराधियों पर नियंत्रण लगाये जाने तथा वांछित अभियुक्तों की गिरफ्तारी हेतु की जा रही कार्यवाही के क्रम में थाना कोतवाली नगर पुलिस द्वारा जमीन का जबरन बैनामा फजह्व तरीके से बैनामा कराने तथा व्यक्ति को आत्महत्या के लिए उकसाने वाले वांछित अभियुक्त को गिरफ्तार किया है । गौरतलब हो थाना कोतवाली नगर क्षेत्र के खाईपार की रहने वाली आशमा ने थाना कोतवाली नगर पर सूचना दी थी कि उनके पति निसार अहमद के नाम पर जमीन थी जिसे कुछ लोगों द्वारा जबरन फजह्व तरीके से पैसे का बिना-लेन किए दबाव बनाकर अपने नाम कर लिया है तथा उनके साथ गाली गलौज कर धमकी भी देते थे जिसके चलते उसके पति निसार अहमद ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर लिया था तथा एक सुसाइड नोट भी प्राप्त हुआ था । सूचना पर थाना कोतवाली नगर में सुसंगत धाराओं में अभियोग पंजीत करते हुए । घटनाक्रम का गहनता से अवलोकन किया गया करते हुए साक्ष्यों का संकलन किया गया तथा सुसाइड नोट को परीक्षण हेतु विधि विज्ञान प्रयोगशाला भेजा गया था । संकलित साक्ष्यों एवं प्राप्त तथ्यों के आधार पर अभियुक्त फारूख अली पुत्र अहमद अली निवासी खूंटी चौराहा अलीगंज की संलिप्तता पाई गई ।



जिसे थाना कोतवाली नगर पुलिस द्वारा गिरफ्तार कर न्यायालय भेजा गया । साथ ही, प्रकरण में संलिप्त अन्य अभियुक्तों के संबंध में भी गहनता से साक्ष्य संकलित किए जा रहे हैं । विवेचना के दौरान प्रकाश में आने वाले तथ्यों एवं साक्ष्यों के आधार पर घटना में शामिल प्रत्येक अभियुक्त के विरुद्ध नियमानुसार कठोर एवं प्रभावी विधिक कार्यवाही सुनिश्चित की जाएगी ।

जल संस्थान के अधिकारियों की मनमानी

कई मोहल्लों में पानी आपूर्ति बंद, ठेकेदारों के वर्चस्व के आगे पंगु हुए अधिकारी

बांदा किरन कश्वलेज चौराहे से कर्बला रोड नोनिया मोहाल में पानी की आपूर्ति पूरी तरह से बंद पड़ी है जनता द्वारा संबंधित विभाग के अधिकारियों को कई बार बताया कि कई महीने से 500 मीटर के अंदर 6 जगह से पाइपलाइन फटा हुआ है लेकिन आश्वासन देकर जनता को टाल दिया जाता है भूरागढ़ से पानी की सप्लाई जेल रोड आ रहा है जेल रोड पानी टंकी में मात्र दो ही मशीन चल रही है दो कई महीने से खराब पड़ी है नहीं बनवाया जा रहा है वही एक कर्मचारी ने नाम ना बताने के शर्त पर बताया कि अधिकारियों और ठेकेदारों में पट नहीं रही है जिसके कारण पानी की सप्लाई बाधित है जबकि किरन कश्वलेज से नोनिया मोहाल तक पूरी पाइपलाइन बदलना आवश्यक है तभी जाकर जनता को पानी मिल सकता है अब देखना यह है कि जनता को पानी कब मिलता है अधिकारियों की मनमानी से जनता धरना प्रदर्शन करने पर मजबूर है

दार्शनिक समाचार हिन्दी साप्ताहिक के लिए स्वत्तवाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक विनोद कुमार सैनी द्वारा सुदर्शन मुद्रक सी. के. 63/42 छोटी पियरी, बेनियाबाग, वाराणसी से मुद्रित कराकर प्रधान कार्यालय सी. 15/363 लल्लापुरा-माताकुण्ड वाराणसी से प्रकाशित ।
सम्पादक: विनोद कुमार सैनी
समाचार पत्र में प्रकाशित विज्ञापन, समाचार से संबंधित किसी भी विवाद का निपटारा वाराणसी न्यायालय के अधीन होगा।
Website : darshniksamachar.in
E.mail : darshniksamachar@gmail.com darshniksamachar2@gmail.com
Mo.- 91+9451677163, 9889014248